।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 मई 2023 | वर्ष 16 अंक 2

कुल पृष्ठ - 36 | वार्षिक शुल्क : ₹ 80/- (भारतवर्ष में), ₹ 800/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 7/-

सद्गुरु देऊँराम अमृतवाणी

पिछले अंक से आगे...

ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त और बसन्त ये छः ऋतुएँ प्रति वर्ष आया करती हैं । इन छः ऋतुओं में परमात्मा द्वारा रस भर दिया गया है व सभी ऋतुएँ आनन्द देने वाली और मन को भाने वाली हैं, फिर भी बसन्त ऋतु की महिमा विशेष रूप से गायी गयी है । छः ऋतुओं के निचोड़ को मनुष्य शरीर में घटाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध और वैराग्य ये छः ऋतुएँ आया करती हैं । बसन्त आदि ऋतुओं द्वारा मानव इतना मोहित नहीं होता जितना कि शब्द, स्पर्श आदि ऋतुओं द्वारा होता है । शब्द स्पर्शादि ऋतुओं में एक ऐसा रसीला मिठास भरा हुआ है जो इनके अभाव में बसन्तादि ऋतुएँ भी फीकी सी जान पड़ती हैं ।

शब्द स्पर्शादि से सर्वथा भिन्न छठी ऋतु है-वैराग्य । वैराग्य रूपी ऋतु जो है वह एक ऐसे आनन्द से भरपूर रहती है कि उसके आगमन की सूचना पाते ही बसन्त आदि छः ऋतुएँ व शब्द स्पर्शादि पाँच ऋतुएँ निस्तेज व हतप्रभ होकर रह जाती हैं । वैराग्य ऋतु के सामने इन ऋतुओं का कोई भी महत्व नहीं रह जाता । सौभाग्यवश जिन मनुष्यों के जीवन में इस अपराजित वैराग्य ऋतु का उदय होता है, उन वैराग्य प्राप्त जिज्ञासुओं को जिनका मन भँवरों के समान होता है, उनको ही वैराग्य से उत्पन्न अलौकिक सुगन्धि का अनुभव होता है । वैराग्य ऋतु में उत्पन्न हुए देवीय गुणों रूपी सुगन्धि का पान कर जिज्ञासु लोग समस्त आनन्दों की चरम सीमा को पार कर तृप्त हो जाते हैं । जैसे बसन्त ऋतु के सुहावने समय को पा कर छोटे-बड़े सभी पेड़-पौधे हरे-भरे होकर नाना प्रकार के सुगन्धिमय फूलों से सुशोभित होने लगते हैं । वैसे ही जिज्ञासुओं के शरीर रूपी बगीचे में लगे इन्द्रियों रूपी पेड़, पौधों व लताओं में देवीय सम्पदा के शुभ गुणों रूपी फूल (जो कि अभी तक कलियां ही थीं) वैराग्य ऋतु को पाकर, विकसित होकर लहराने लगते हैं और जिज्ञासुओं का मन रूपी भंवरा दैवीय गुणों से उत्पन्न सुगन्ध का आस्वादन कर कृतकृत्य हो जाता है । जैसे फुलवाड़ी में लगे फूल बसन्त ऋतु को पाकर प्रफुल्लित होते हैं । वैसे ही इन्द्रियां शुभ गुणों रूपी फूलों को पा कर खिल उठती हैं । जैसे बसन्त ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर भंवरे मीठे स्वर से गुंज्जार करते हैं, वैसे ही जिज्ञासु भी वैराग्य ऋतु के आकर्षक दृश्य को देख कर बहुत मीठे स्वर से राम-नाम का उच्चारण करते हैं । जैसे भंवरे पेड़-पौधों, लताओं, पत्तों, कांटों और फल-फूलों का भी परित्याग कर फूलों में छुपे सुवास को ही लेते हैं । वैसे ही जिज्ञासु भी क्षण-क्षण में बदलने वाले इस असार संसार के तमाम भोगों को छोड़ कर केवल सार रूपी सुवास को ही

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

ग्रहण करते हैं । यह बसन्त ऋतु देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों आदि को बहुत प्यारी लगती है, तो वैराग्य ऋतु जिज्ञासुओं व मुमुक्षुओं को बहुत अच्छी लगती है । जिज्ञासु लोग इस वैराग्य विभूति को पा कर सुखी हो जाते हैं । परन्तु यह वैराग्य, किसी बड़भागी को ही प्राप्त होता है ।

दोहा - आई ऋतु बसन्त की, भंवरा भये सुजाग ।
कह टेऊँ किस पुण्य ते, जागे तिनके भाग ।।

मतलब तो बसन्त ऋतु के पधारने के संकेतों को पाकर भंवरे आलस्य छोड़कर सावधान हो जाते हैं और यहाँ भी अनेक जन्म-जन्मान्तरों में किये गये शुभ-कर्मों के फलस्वरूप वैराग्य की उपलब्धि जिन जिज्ञासुओं को होती है, वे ही इस मोह-नींद से जाग कर विषय-भोगों का परित्याग कर भगवान के भजन में निमग्न हो जाते हैं । इस विषय पर गुरु महाराज जी ने प्रवचन देकर राम-नाम की धुनि लगाकर सत्संग समाप्त किया । होली के उत्सव के बीतने पर हाला गाँव के भक्त खियाराम जी के नम्र निवेदन को स्वीकार कर गुरु महाराज जी हाला गाँव में पधारे । इकतारों व घुँघरूदार बण्डों के स्वर से स्वर, ताल से ताल मिलाते हुए, गाते बजाते हुए खियाराम जी के निवास स्थान पर पहुँचे । गुरु महाराज जी के गाँव में पधारने का शुभ-समाचार पाकर फूल-मालाएँ व प्रसाद लेकर गाँव की पंचायत स्वागत-सत्कार के लिये गुरु महाराज जी के पास आयी । गुरु महाराज जी ने पंचायत का स्वागत-सत्कार स्वीकार कर यथायोग्य सब का सम्मान कर, सब को विदा किया । नियमानुसार सत्संग मण्डप में जाकर सत्संग आरम्भ किया । प्रेम के विषय पर बोलते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि भगवान व सन्त-महात्मा सच्चे हृद्य के प्रेम पर ही रीझते हैं और प्रेमातिरेक के कारण ही वह निराकार परमात्मा साकार रूप में बदल जाता है ।

चौपाई- प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम ते होय प्रकट मैं जाना ।

मतलब तो पत्ते-पत्ते, डाली-डाली, फूल-फूल में तो क्या परन्तु समस्त विशाल विश्व के चर-अचर जीवों व पदार्थों में परिपूर्ण परमात्मा व्याप्त हो रहा है । सर्वत्र होते हुए भी भक्ति के प्रभाव से विशेष रूप में प्रकट होता है ।

छन्द - इस प्रेम से निराकार भी, देंदा आन दिखाली जी ।
प्रेम प्रभू को खींच ले आवे, देंदा जदो उछाली जी ।।
मछी प्रीति पानी से कैसी, जिन्दा किसे निकाली जी ।
रूप शमां दा देख पतंगा, जान आपनी जाली जी ।।
फूलों नाल मुहोब्बत भंवरे, फिरंदा डाली-डाली जी ।
देखी प्रीति पपीहे वाली, द्राढी अजब निराली जी ।।
सागर नदियाँ छोड़ के चाहे, बूँद स्वाती वाली जी ।
मोर पायला पा पा थक्के, चढ़े जदों घट काली जी ।।
शब्द बीन का सुनकर जदहीं, घर छद्रि आवे व्यालीजी ।
चकवा चकवी प्रीति के कारण, उड़हिं रात उताली जी ।।
पिया चकोर उड़ीका करंदा, चढ़हिं रात दा वाली जी ।
चतुरदास धिक है तिस मानुष, जिसने प्रीति न पाली जी ।।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 मई 2023

वर्ष 16 | अंक 2

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 80	₹ 800
दो वर्ष के लिये	₹ 160	₹ 1600

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंबु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कवित्त

जय जय सांई टेऊँराम

पावन सिंधु तट के उद्यानों बीच था खण्डू ग्राम,
उषा काल था फूल वंश में जन्में टेऊँराम।
मात-पिता थे साधु वृत्ति के पगे भक्ति के रंग,
आनन्दमय कीर्त्तन के स्वर संग होता नित सत्संग।
अन्धकार को दूर हटा ज्यों स्वर्णिम रवि मन मोहे,
वैसे माँ के आंचल में छबि टेऊँराम की सोहे।
वरुण देव के परम मित्र, थे साईं देव अवतार,
मानव तन धर करने आए भक्तों का उद्धार।
माया ठगिनी के विविध रूप सब प्रवचन में समझाए,
नवधा भक्ति अरु मोक्ष शास्त्र प्रेमी जन को बतलाए।
पाप स्वार्थ वासनाओं के कलुष जो मन पर छाएँ,
सत्कर्मों व गुरु कृपा से कैसे उन्हें हटाएँ।
लीलाएँ रच भक्त जनों के दिया दिशा निर्देश,
नगर नगर टोली गुण गाए जय जय हे दरवेश।
'सत्नाम साक्षी' मंत्र दिया जो करता मन को शुद्ध,
जपते नित उठ साधु संत प्रेमी जन भक्त प्रबुद्ध।
श्री सांईं टेऊँराम का जीवन चरित है अति महान,
शीश नवाओ चरणों में नित करो गुरु का ध्यान।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	दो शब्द सम्पादकीय (चालीसा विशेष)	4–5
03	कथा राजा भोज, बंदर और शेर की (सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज के हृदयोद्गार)	6–8
04	पावन पथ प्रदर्शक (सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज)	9–11
05.	धर्म	11
06.	रहण साणु रंगिजी	
07.	(वात्सल्यमूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज)	12–13
08.	श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाचार्य मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज	14–15
09.	चालीहा व्रत की महिमा- बाबा टेऊँराम का हुआ था अवतरण	16–17
10.	संसार में हमारे ज्ञान की परीक्षा	17
11.	सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की गुण-महिमा के पावन प्रसंग	18–19
12.	सत्संग-सेवा-सुमरण का अनोखा संगम- चैत्र मेला 2023	20–23
13.	102वें चैत्र मेले में पूज्य महाराजश्री द्वारा अमृतरस वर्षा	24–28
14.	'युगपुरुष सद्गुरु सांई टेऊँराम' फिल्म का प्रीमियर समाचार	29
15.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 94वां जन्मोत्सव समाचार	30
16.	मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु सांई टेऊँराम जी महाराज का 137वां जन्मोत्सव सूचना	30
17.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जन्म महिमा भजन	31
18.	सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जीवन-दर्शन निबंध प्रतियोगिता सूचना, गंगास्तुति	32
19.	सांई टेऊँराम प्रकाशोत्सव-जयंती महोत्सव कैसे मनायें	33
20.	अमरापुर गमन	34
21.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	35
22.	व्रत – पर्व – उत्सव + सूचना, आतिशबाजी सूचना	35
23.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	36

दो शब्द

चालीसा

भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म में चालीसा का अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान है, हिन्दू धर्म में चालीसा की उपासना एवं मान्यता सर्वोपरि है। चालीसा आराध्य की कृपा पाने का श्रेष्ठ साधन है। चालीसा को पढ़ते रहने से व्यक्ति के मन में साहस, आत्म विश्वास और पराक्रम का संचार होता है। भक्त (साधक) द्वारा भगवान इष्टदेव या आराध्य को प्रसन्न करने के लिये और अपनी समस्याओं के निवारण (दूर) करने के लिये सरल भाषा में की गई प्रार्थना को ''चालीसा'' कहा जाता है, जिसमें आप अपने आराध्य देव जी की स्तुति करते हैं। इसमें चालीस पंक्तियां रहती है (यह पद्यात्यक 40 छन्द की होने के कारण ''चालीसा'' कहलाती है) इसमें आराध्य देव द्वारा किये गये कार्यों के बारे में दर्शाया गया होता है। उनका हम यशोगान करते है, जिससे वह प्रसन्न हो जाते है। सुनने और पढ़ने में आनंद आता है। अत्यंत सरल भाषा में लिखा होने से इसे आसानी से पढ़ा जा सकता है। मंत्रों के जाप में कठिनाई हो सकती है परन्तु चालीसा के पठन में कोई कठिनाई नहीं होती, चालीसा में प्रत्येक पंक्ति का अलग - अलग महत्व होता है।

महापुरुषों के मतानुसार श्री तुलसी दास जी द्वारा रचित हनुमान चालीसा के पश्चात् बहुत से विद्वान महानुभावों द्वारा अपने-अपने आराध्य के सम्बन्ध में चालीसा की रचना की गई है।

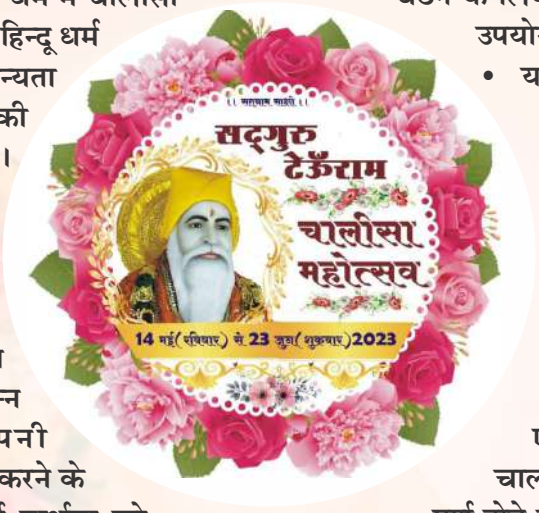

पाठ करने की विधि:

- सर्वप्रथम-जिस स्थान पर पाठ कर रहे हैं वह स्थान पवित्र होना चाहिए, साथ ही स्वयं (साधक) को भी स्वच्छ अवस्था में स्थिर मन से, एकाग्रता के साथ चालीसा का पाठ करना चाहिये।
- बैठने के लिये ऊनी या कुशा के आसन का उपयोग करना चाहिए।
- यदि आप अपने निवास स्थल पर रहकर जिन आराध्य देव के चालीसा का पाठ कर रहे है, उन आराध्य देव का ध्यान कर या आराध्य देव के चित्र या मूर्ति के सम्मुख-दीपक जलाकर साथ में एक जल से भरा लोटा समीप में रखकर पाठ करें। कम से कम एक बार से लेकर तीन बार तक चालीसा का पाठ कर सकते हैं। पाठ पूर्ण होने के उपरान्त जल को प्रसाद की तरह ग्रहण करें, साथ ही थोड़ा-थोड़ा जल अपने निवास स्थल में छिड़क दें, इससे आप सकारात्मक प्रभाव महसूस करेंगे साथ ही आपके घर से सभी नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जावेगी।
- प्रयास करें कि चालीसा का पाठ प्रतिदिन एक ही समय पर करें, तो बहुत अच्छा होगा।
- विशेष परिस्थितियों में यात्रा के समय या सोते समय भी चालीसा का पाठ कर सकते हैं।

जैसा कि आप सभी सुविज्ञ पाठकों को विदित ही है कि मूर्तिमान ब्रह्मस्वरूप आचार्य पूज्य सद्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के इस धराधाम पर अवतरित होने के मंगल पावन दिवस के 40 चालीस दिवस पूर्व अर्थात् दिनांक 14 मई से 23 जून 2023 तक चालीसा महोत्सव पूर्ण श्रृद्धा-उमंग-व उत्साह के साथ सम्पूर्ण विश्व में निवासरत माननीय / सम्माननीय प्रेम प्रकाशी जनों द्वारा देश विदेश में स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर पूर्ण

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश मोहरूपी घोर अन्धकार को नाश करने के लिये आत्म-ज्ञान रूपी दीपक की ही आवश्यकता होती है। यह आत्म-ज्ञान रूपी दीपक ब्रह्मनेष्ठी और ब्रह्मक्षोत्रिय देहधारी सद्गुरु ही दे सकता है।

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

मनोयोग एवं श्रृद्धाभाव के साथ मनाया जा रहा है।

चालीसा का पाठ करने के लाभः-

हर एक साधक के पृथक-पृथक अर्थात् अलग-अलग अनुभव होते है, किसी को कुछ लाभ होता है तो किसी को कुछ लाभ होता है। ऐसे लाभ जो हर किसी को मिलते हैं :-

- मानसिक शांति मिलती है।
- धन धान्य एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है साथ ही स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- जाने अनजाने में हमारे द्वारा किये गए पाप नष्ट हो जाते है।
- लिये जाने वाले निर्णय सही होने लगते है।
- निरन्तर पठन से व्यक्तित्व में बदलाव आने लगता है।
- आत्म विश्वास में वृद्धि होती है साथ ही इच्छा शक्ति मजबूत होती जाती है।
- इसके पठन से हमारा आध्यात्मिक बल बढ़ता है, आध्यात्मिक बल से ही हम जीवन की हर परेशानी से छूट सकते है।

इस चालीस दिवसीय अनुष्ठान का सुफल (परिणाम) इस बात के ऊपर निर्भर है कि हम अपने लक्ष्य के प्रति कितने समर्पित हैं। अपने आराध्य सर्व समर्थ मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के अमृतमयी वचनों एवं पावन श्री चरणों में कितनी श्रद्धा एवं अटूट विश्वास है।

अपनी माता के वचनों पर अटल विश्वास कर मात्र 5 वर्ष के बालक ''ध्रुव'' को भगवान के दर्शन हुए, वह भगवान की गोद में बैठा। ठीक इसी तरह 5 वर्ष का छोटा सा बालक (भक्तराज प्रहलाद) जिसे भगवान पर इतना विश्वास था कि वह भगवान के लिए कुछ भी कर सकता है उसके लिए भगवान स्वयं खम्भा फाढ़कर प्रकट हो गये थे।

''सद्गुरु करुणा रूप हैं, सद्गुरु शक्ति भण्डार।
कह टेऊँ विश्वास जिस, तांका बेढ़ा पार।।''

''मन सद्गुरु के द्वारे चलिए, सद्गुरु गरीब नवाज़ हैं,
जो श्रद्धा से उसकी ओट ले,
तिस जन की वो राखत लाज है।।''

(श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ)

इस चालीस दिवसीय अनुष्ठान में कृपया सभी माननीय, सम्माननीय प्रेम प्रकाशी जन यह सुनिश्चित करें :-

- भूलकर भी तामसिक भोजन या मदिरा का सेवन नहीं करें।
- क्रोध पर नियत्रंण करने एवं मिथ्या व कटूवचन न बोलने का ईमानदारी से प्रयत्न करें।
- किसी भी प्राणी मात्र (जलचर, नभचर एवं थलचर) को पीड़ा नहीं पहुंचाएं।
- परिवार में माता - पिता व वृद्धजनों का अपमान व अव्हेलना न करें अपितु उनकी सेवा करने का व्रत लें।
- समस्त प्राणी मात्र के प्रति ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।'' की मंगलकामना करें।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि चालीसवें दिन हमारे ऊपर परम आराध्य मंगलमूर्ति आचार्य प्रवर पूज्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज की अहेतुकि कृपा अवश्य बरसेगी साथ ही हमारे जीवन में निर्भयता, निश्चिंतता और निशोकता अवश्य आवेगी।

- संपादक, प्रेम प्रकाश संदेश

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिस गंदे शरीर पर गर्व करते हो वह तो एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा।

कथा राजा भोज, बंदर और शेर की

तपोनिधि, पुण्य पुंज प्रातः स्मरणीय परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज जी के हृदयोद्गार

गज के बोलो सनातन धर्म की जय
रामकृष्ण भगवान की जय
सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जय
सर्व सन्तन की जय
प्रेम प्रकाश मण्डल की जय
भारत माता की जय
गंगा मैया की जय
प्रेम से बोलो हरे राम।

पिछले अंक से आगे

प्रेम से बोलो हरे राम।

राजा दिल में कहने लगे ये तो मैं... मैं हूं जो बांदर को विश्वास देके धिक्का दिया। अरे ये तो मैं हूं। कहने लगे अच्छा दूसरा सुनाओ! कि राजन्! विस.... "सकार" का अर्थ सुनो।

सेतु बंधे समुद्रे, गंगा तीरे च संगमे।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो, मित्र द्रोहे न मुच्यते।।

हे राजन! ये सुना, राजा सुनके कांपने लगा। ये क्या? ये क्या कहती है ब्राह्मण की लड़की कि "सेतु बंधे समुद्रे" समुद्र से पुल सेतू बांधी श्री रामचंद्र ने। जो धाम है रामेश्वर तीर्थ, वो रामेश्वर करावे धाम "गंगा तीरे च संगम" संगम गंगा यमुना का प्रयागराज वो तीर्थ करके, रामेश्वरम करके सर्व पाप दूर हो जाता है। सर्व पाप नाश हो जाएगा। परंतु जो मित्र का द्रोही होता है विश्वास देके उसका नाश करना चाहते हैं। ये सारा तीर्थ सारा धाम करेंगे तो भी पाप नहीं उतरेगा। राजा कहने लगे हो... ये तो मैं हूं। अरे ये क्या हुआ... अच्छा हे ब्राह्मण की कन्या आगे सुनाओ! कालिदास कहने लगे सुनो! वि...स...म... मकार का अर्थ सुनो।

"मेरु तुल्यं स्वर्ण दानं, एक चित्तेन दीयते,
मुच्यते सर्व पापेभ्यो, मित्र द्रोहे न मुच्यते"

हे राजन! सुमेरु समान सोने का दान जैसे राजा कर्ण ने बहुत दान किया ऐसे सोने का दान उत्तम है। सुमेरु के समान सोने का दान हर रोज करे तो पाप सारा दूर हो जाएगा। पर जो मित्र का द्रोही बनता है। स्त्री पुरुष की द्रोही बनती है। पुरुष स्त्री का दुखदायी बनता है। जो शरण में आता है उसकी रक्षा जो नहीं करता है। विश्वास देके उसका नाश करता है। इतना दान करेगा तो

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी जब कोई सांसारिक पदार्थों एवं कार्यों का त्याग करता है तब वह परमात्मा के निकट होता है।

भी वो पाप नहीं मिटेगा, वो पाप नहीं उतरेगा, पाप दूर नहीं होगा। राजा भोज कहने लगे ये तो मैं हूँ! राजा कांपने लगे। पंडित सुन रहे हैं कि ये ब्राह्मण, ये कौन है.. . ब्राह्मण की लड़की? राजा भोज कहता है अच्छा आगे सुनाओ! कि राजन सुनो वि...स...म...रा... रकार का अर्थ सुनो

''रामनाम परम धाम, एक चित्तेन भाष्यते।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो, मित्र द्रोहे न मुच्यते।।''

जब इतना कहा तभी राजा सेज से गिर पड़ा। सेजा से गिर पड़ा, मूर्छित हो गया। क्यों हुआ? कि ये क्या कहती है कि राम का जो नाम है ये परमधाम है। अजामेल, सदने कसाई जैसे पापी राम नाम जपके तर गए। ऐसा राम का नाम पवित्र है, सारे पापों को नाश कर देता है। पर जो मित्र का द्रोही है विश्वासी को विश्वास देके शरण में उसको लेके फिर उसक नाश करता है। हजार जन्म नाम जपेंगे, राम का नाम जपेंगे तो भी पाप दूर नहीं होगा। इसका तो प्रायश्चित रहा ही नहीं। इसलिए राजा गिर पड़ा, अमीर वजीर दौड़कर आये। उसको पंखा लगाके, पानी गुलाब का छिड़काव करके सुजाग करा। राजा उठके कहता है - हा हा... हो हो... हा हा... ये तो मैं। परंतु राजा दिल में विचार करता है कि ये है कौन? इससे पूछें तो सही! तभी राजा भोज कहता है, कालिदास पंडित को। क्या कहता है?

''ग्रामे वससि भो देवि ! वने नैव गच्छसि,
कपि सिंह मनुष्याण, किम जानासि सुंदरी''

हे पुत्री! हे सुंदरी! सुनाओ तो सही आप शहर में रहने वाली, कभी शहर के बाहर जंगल में नहीं गई । ''ग्रामे वससि भो देवि! वने नैव गच्छसि'' कभी वन जंगल में गई नहीं। कपि... कपि माना बंदर, सिंह और मनुष्य उसका जो संवाद आपस में चर्चा ''किम जानासि सुंदरी'' आप कैसे जानती हो ? इस बात को कैसे जानती

हो! तभी कालिदास ने विचार करा कि अभी मौका है! बड़ा अच्छा हुआ ! कालिदास कहता है राजन सुनो मैं कैसे जानती हूं?

''देवी गुरु प्रसादेन, कंठे बसति शारदा,
सर्वमेतद्विजानामि, भानुमतेस्तिल यथा''

हे राजन् ! सद्गुरु, माता सरस्वती देवी की कृपा से वो सरस्वती माता शारदा मेरे कंठ में बसती है। मेरे कंठ में उसका निवास है, मैं सर्व तत्वों को, त्रिलोकी को जनता हूं। त्रिकालदर्शी हूं। कैसे जानता हूं? कि ''भानुमतेस्थिल यथा'' जैसे रानी भानवंती का तिल बाग में आपको दिखाया। राजा कहने लगे ये तो कालीदास है। पंडित भी उठा कि ये तो कालीदास है। राजा भोज ने उठकर पर्दा खुलवाके कालिदास के चरणों पर आके अपना मस्तक रखा । राजा भोज रोकर कहने लगे हे भगवन्! हे प्रभु! मैं ने बड़ा पाप किया है। एक तो आपको बिना दोष गाली देके गुस्सा कर क्रोध से निकाल दिया। दूसरा यह पाप किया बांदर को धिक्का दिया। जो सारा मेरा पाप आपने प्रकट किया है। ये मेरी शरण में आया, मैंने कहा कि मैं उसकी रक्षा करूंगा लेकिन फिर उसको धक्का दे दिया।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सेवा का जो कार्य है वह बहुत कठोर होता है जो योगियों को भी दुर्लभ मिलता है, इसे अपना कर्तव्य समझकर ही करना चाहिए।

कालिदास कहते हैं, हे राजन! आपने बड़ा पाप किया है। इस पाप का कोई प्रायश्चित नहीं है। एक प्रायश्चित है बाकी दुनिया के अंदर दूसरा कोई प्रायश्चित नहीं है। अश्वमेघ यज्ञ करो तो भी पाप नहीं उतरेगा। राम नाम ने अनंत पापियों को तार दिया। हजार बरस, हजार जन्म राम नाम जपेंगे, भक्ति करेंगे तो भी पाप दूर नहीं होगा, ऐसा पाप आपने किया है। कि प्रभु! फिर कोई रास्ता है! कि हां जी, एक रास्ता है वह आगे आपको सुनायेंगे। सारी सभा जितनी बैठी थी, अमीर वजीर पंडित कालिदास की जय जय बोलाई! कालिदास को सिंहासन पर आके राजा भोज ने अपने बाजू में बैठाया।

प्रेम से बोलो हरे राम!

इसका सिद्धांत क्या है? सार क्या है? की ये बच्चा रो-रो के माता की शरण में आता है, जो माता बच्चे की रक्षा नहीं करती है। बच्चे का नाश करना चाहती है, वो सीधी नर्क में जाएगी, जब तक चंद्र और सूरज होगा। जैसे राजा भोज को पाप लगा ऐसे उसी माता को पिता को पाप लगेंगे, जो बच्चों को नाश करना चाहते हैं। कोई कहेंगे महाराज! बच्चों का नाश करना कौन चाहता है? कि हां जी जो बच्चे को सुधारता नहीं है, धर्म की शिक्षा नहीं देता है। धर्मी विद्या नहीं पढ़ाता है। सत् का उपदेश नहीं देता है वो बच्चे का नाश करना चाहता है। सच्ची करे पूछो - फिर चौरासी में जाएगा वो बच्चा! क्यों? कि ये बच्चा रो रो के माता पिता की शरण में आता है। कि हे माता-पिता! मैंने बहुत चौरासी लाख योनियों में दुःख पाया है। अभी मेरे को जन्म मरण के दुःख से छुड़ाओ! मैं आपकी शरण में आया हूं, तो जितने प्रेमी बैठे हो थोड़े में समझ जाओ! बच्चों को सतगुण से पालो। चंचलता बच्चों को ना सिखाओ, आप कहते हो बच्चा चंचल होता है तो मेरे को खुशी होती होगी, नहीं! उसी खुशी से दुःख पैदा होगा। याद रखना! वो आपको रोना पड़ेगा। राजा भोज जितना पाप लगेगा क्योंकि बच्चा शरण में आता है माता पिता के। उसकी शरण की रक्षा करो, जितने प्रेमी बैठे हो। बच्चों को धर्मी विद्या पढ़ाओ। बोली सिखाओ तो पहले कहो, पुत्र कहो "राम" पुत्र कहो राम! जब राम कहे, उसके पीछे थोड़ी थोड़ी बोली सिखाओ। पुत्र झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना। हे पुत्र सिनेमा में नहीं जाना। किसी से झगड़ा नहीं करना। यह बच्चों में संस्कार डालो और बच्चों को चाय मत पिलाओ। बच्चों को चाय की बचपने में आदत पड़ेगी, वो छोड़ेंगे?? चाय की तो ऐसी आदत खराब है कि एक प्रेमी को मैंने कहा कि चाय छोड़ दो। कि महाराज! मैं मर जाऊंगा। रोटी कहो तो ना खाएं तो ना खाएं, बाकी चाय तो पियेंगे।

यहां एक बूढ़ा है कि महाराज मैं मर जाऊंगा मुझे चाय दो। चाय जो दी तो कहने लगे कि महाराज आप ने मेरे को त्रिलोकी का राज दे दिया। ऐसी तो खराब चाय है। पियो दुःख में, बुखार में, खांसी में, भले चार-पांच दिन, १० दिन पियो। हर रोज आदत ना बनाओ। और बच्चों को चाय की आदत मत डालो। बच्चों को मछली मांस ना खिलाओ। बच्चों को सतगुण से पालो, न तो बड़ा पाप होगा। जितने प्रेमी बैठे हो!! समय पूरा हुआ है। इसमें भी थोड़ा कहना है, वह आगे कहा जाएगा। जितने प्रेमी बैठे हो!! बच्चों को सतगुण से पालो। तो बच्चे आपको सुख देंगे। बच्चे का नाम ही है पुत्र! पु...त्र। पु का नाम है नर्क का! पुत्र, जो नर्क से माता पिता को तारे वो पुत्र है, न तो गंदगी है। सो आप पुत्रों को गंदगी मत बनाओ। जितने प्रेमी बैठे हो! जितने जीव पुत्रों को पुत्र बनाओ तो आप भी सुख पाओ और बच्चा भी सुख पावे।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश सब जीवों को परलोक के मार्ग में काम आने वाला सामान अभी से ही लेना चाहिये। सामान वह खरीदना चाहिए जो कभी भी पुराना न हो, न ही बेचने पर घाटा पड़े। वह है निष्काम सत्कर्म एवं नाम-स्मरण

पावन पथ प्रदर्शक

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज

नेह निभाना

प्रयागराज का प्रसंग स्मरण में आ रहा है। जो जीवन मे कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। कई महापुरुषों की छावनियों में महाराजश्री का जाना और महाराजश्री के पास सत्पुरुषों का आगमन और उनसे ज्ञानचर्चा एवं पावन विचारों का आदान प्रदान पावन पथ दर्शाता है। श्री देवरहा बाबा, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी विरक्त महापुरुषों का आगमन एवं महाराजश्री के क्रियाकलाप सदैव स्मरणीय रहेंगे। और प्रेम का परिचय तो महाराजजी ने तब दिया जब स्वामी गुरुशरणानन्दजी महाराज रमणरेती वाले, जिन्होंने अपने गुरु महाराज श्री स्वामी हरिनामदासजी महाराज की पावन पुण्य तिथि का महोत्सव मनाया, महाराजश्री स्वास्थ्य ठीक न होने के बावजूद भी वहां अनेक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये पहुंचे। स्वामी गुरुशरणानन्द के क्षेत्र में ही महाराजश्री की तबियत बहुत खराब हो गयी, उनकी छाती में बड़ी जोर का दर्द हो गया और वह तुरंत ही अपनी छावनी में लौट आये। लेकिन नेह निभाना तो कोई उनसे सीखे। और महाराजश्री कहते थे- जब विरह है तो कोई बहाना नहीं, जब नेह है तो निभाना पड़ेगा। ऐसे और भी कई उदाहरण महाराजश्री के जीवन में नेह निभाने के पाये गये हैं। ये तो संतों के प्रसंग हैं। साधारणजनों से भी निभाने में महाराजश्री ने कोई कसर नहीं छोड़ी। जरा सा भी प्रेम करने वाले का महाराजश्री भंडार भर देते थे।

सहनशीलता

महाराजश्री का एक श्रेष्ठ गुण था- सहनशीलता का! कोई भी कितना भी महाराजश्री का सत्कार करे तो वह उसमें अडोल रहते थे। कोई कितना भी ऊंचा नीचा बोले

तो भी वह शांत गम्भीर ही बने रहते थे।

एक बार एक साधु सत्संग में महाराजश्री के लिये अपशब्द का प्रयोग कर रहा था, उनको महाराजश्री के बाहर का क्रियाकलाप ही दिखायी पड़ रहा था, उस साधु को महाराजश्रीकी अर्न्तमुखता एंव गहराई का कोई पता ही नहीं था। बहुत ऊटपटांग शब्द माँ पर बोल रहा था। महाराजश्री धीर, गम्भीर एंव शांत ही बने रहे, किसी भी

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश दुनिया में कहने वाले मनुष्य बहुत हैं, करने वाला कोई विरला है।

क्षण कुपित नहीं हुए। फिर महाराजश्री ने प्यारा सा उत्तर दिया कि प्रवचन करना भी सौदा बेचना है। ग्राहक पर ही बात निर्भर करती है कि वह सोच समझकर ही सौदा खरीदे। जो चीज पंसद नहीं है, उसे छोड़ दो। जो चीज हमारे काम की नहीं है, उसके बारे में चिन्ता भी क्या करना। कितना प्यारा समाधान ढूंढ निकाला महाराजश्री ने। महाराजश्री का ये सहनशीलता का गुण हम सबके लिये पावन पथ प्रदर्शक है। इससे हमें भी महाराजश्री से प्रेरणा लेनी चाहिये कि हम भी हर परिस्थिति में अडोल रहें और महापुरुषों के जीवन को हम दर्पण बना लें कि उनके ऊपर जब विपत्ति आयी तो उन्होंने समाधान कैसे निकाला। हम भी वैसा करेंगे तो उनका अनुभव हमारा अनुभव बन जाएगा। और बड़ी बात तो यह है कि वो समर्थ होते हुए भी अपनी समर्थता का दुरुपयोग नहीं करते थे। जैसे कि संतों ने कहा है-

सौ हजार तिनहां तां सदके, जेड़े गाल करिंन सदा हिकाहू।
लख किरोड़ तिनहां तों सदके, जेड़े मूंह न बोलिन फिकाहू।।
नील पदम तिनहां तों सदके, जेंड़े मन न रखें झिकाहू।
दोनो जान तिनहां तों सदके, जेड़े होविन सोन सड़ा विन सिक्काहू।।

अर्थात् सौ हजार रुपये उन्हों के ऊपर कुर्बान किये जाएंगे जो वचन के पक्के होते हैं। लाख करोड़ उन पर न्यौछावर हैं जो मुंह से फीका नहीं बोलते हैं। अर्थात् जो मधुरभाषी हैं तथा नील पदम यानी बड़ी से बड़ी सम्पदा उनके ऊपर कुर्बान की जाये जो अपने में नम्रता को धारण करते हैं। अंत में महापुरुष कहते हैं कि लोक एवं परलोक दोनों ही उनके ऊपर कुर्बान किये जाएं, जो हों तो भगवतस्वरूप लेकिन अपने को दासों के भी दास समझते हों। ऐसे ही थे हमारे प्यारे सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज!

वचन में ऋद्धि सिद्धि

सद्गुरु महाराज ऋिद्धियों- सिद्धियों के तो साहिब थे। कई उदाहरण उनकी ऋिद्धियो- सिद्धियों के देखने को मिलते हैं। जबकि वो ऋद्धियों-सिद्धियों को दिखाना नहीं चाहते थे बल्कि उनकी सहज कृपा से ही कईयों के कार्य सफल हुए। उनके कर कमलो में, उनके

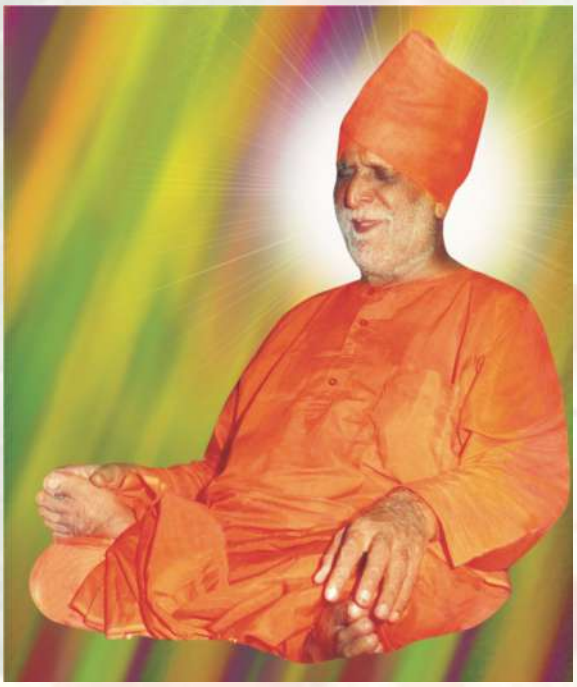

चरण कमलों में, उनके पावन संकल्पों में अद्भुत शक्ति समायी हुई थी। जिनके अनगिनत मिसाल मिलते हैं। यहां उल्लेख करेंगे तो एक अलग से उनकी पूरी पुस्तक चमत्कारों की बन जाएगी। थोड़े से उदाहरण यहां उल्लेख करना बहुत ही जरूरी समझ रहा हूं।

आगरा में एक प्रेमी कन्हैयालालजी रहते थे। उनकी माता जमुना देवी ने नया मकान बनवाया, एक कमरा उन्होंने अपने लिये खास बनवाया था। उस माता का संकल्प था कि जब तक इस कमरे में श्री गुरु महाराजजी नहीं पधारेगें, तब तक उस कमरे का कोई उपयोग नहीं करेगा। ७ साल तक उस माता ने कमरे में किसी को जाने नहीं दिया। श्री गुरु महाराजजी जब वृन्दावन धाम में पधारे तो वही स्वयं श्री कन्हैयालाल को बुलाकर कहते हैं- प्यारे! हम तेरी गाड़ी में चलेंगे और तेरे घर ही भोजन करके विश्राम करेंगे। कन्हैयालाल के विस्मय और आनन्द का तो पारावार ही नहीं रहा। कैसे श्री गुरु महाराजजी ने मुझ पर इतनी कृपा की है।

मुरैना का ही एक प्रेमी जिसको कोई संतान नहीं

होती थी, डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। उन्होंने गुरु महाराजजी से प्रार्थना की तो महाराजश्री सहज में ही बोलने लगे कि चार आना भर ईसबगोल की भुसी दूध के साथ रात्रि में लिया करो और उस प्रेमी ने विश्वासपूर्वक ऐसा ही किया, आज गुरु महाराज की कृपा से उसको दो बच्चे हैं।

एक माता जिसको कोई संतान नहीं थी। महाराजश्री ने कुछ अखरोट प्रसाद रूप में दिये। माता ने छिलकों सहित अखरोटों को कूट कर खाया। जितने अखरोट महाराजश्री ने दिये थे, उतने ही बच्चों की प्राप्ति उस माता को हुई।

मद्रास के श्री उधवदासजी बता रहे थे कि मैं उल्हासनगर में सायकल पर चढ़कर काम करता था, मद्रास में मेरी ससुराल थी। मेरी ससुराल वाले सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के प्रेमी थे और मैं उल्हासनगर रहते हुए भी कभी प्रेम प्रकाश आश्रम नहीं गया था। मेरी सासूजी का गुरु महाराज में अगाध प्रेम था। एक बार जब गुरु महाराजजी मद्रास पधारे तब मैं भी वहीं पर था। मेरी सासूजी ने मुझसे कहा- पूर्ण सत्गुरु यहां पर पधारे हैं, आप उनसे नाम की दीक्षा ले लो। मेरी पत्नी नहीं मान रही थी। आखिरकार हम इस निर्णय पर पहुंचे कि भगवान के सामने पर्ची रखकर इस निर्णय पर पहुंचेंगे कि हमें क्या करना चाहिये। भगवान के सामने पर्ची रखी गयी और उत्तर सही मिला कि स्वामीजी को आप गुरु बनाऐं। और उनकी आशीर्वाद ऐसी हुई कि चन्द ही सालों में करोड़ों तक बात पहुंच गयी। बीच में हमारी बेवकूफी के कारण हल्का झटका भी आया। उस कष्ट की घड़ी ने हमको सच्चे हीरे की परख करवाई। जब भी किसी पार्टी का फोन आता तो फोन उठाते हाथ कांपने लग जाते लेकिन अंदर से ऐसा महसूस होता जैसे कोई कह रहा है कि नाम जपो- नाम जपो! सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप करने से हृदय में ढांढस बंध जाता और लगता कि यही सच्चा हीरा है। फिर ऐसे कठिन समय में ही मेरे साले साहब ने पूरा सहयोग दिया। उस सबके पीछे गुरु महाराज की ही कृपा नजर आती है। जबकि ऐसे झटकों के बाद तो कईयों की जीवनलीला ही समाप्त हो जाती है। जबकि मैंने इस समय में उस प्यारे गुरुदेव की महती कृपा का अनुभव किया। मेरे कार्यालय में गुरु महाराज के पावन ग्रंथों का संग्रह है। जिनका समय-समय पर पठन-पाठन भी चलता रहता है। यह सद्गुरु महाराज की कृपा ही है जो नित्य नई अनुभूतियां करवाते रहते हैं।

गुरु महाराजजी की कृपा से अद्भुत अनुभूतियां होती थी लेकिन महाराजश्री तो एक ही वचन बोलते थे कि सब सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की कृपा का ही फल है।

धर्म

कामना से, भय से अथवा लोभ से धर्म का त्याग नहीं करना चाहिये. धर्म क्या है? अधर्म क्या है? इसका निर्णय शास्त्र से होता है. जो शास्त्र में निषिद्ध बताया गया है वह अधर्म है. कर्म में होने पर भी अधर्म के रास्ते पर पैर नहीं रखना चाहिये. आचार्य सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज का कहना है-

'धर्म अपने माहिं हरदम, प्यार कर नटना नहीं,
सीस जावे जान दे, पर धर्म से हटना नहीं'.

महापुरुष जिस रास्ते से गये हैं वही धर्ममार्ग बतलाया गया है, महापुरुषों ने जिस धर्म का सेवन किया है उसी को अपनाना चाहिये नहीं तो मनुष्य भटक जाता है. तुलसीदासजी महाराज कहते हैं- **'प्रथम मुनिन हरि कीरत गाई, तेहि मग चलत सुगम मोहिं भाई'** अर्थात् पहले के ऋषि-मुनि जिस रास्ते गये हैं उस राह पर चलने में सुगमता है.

कुरान शरीफ में भी प्रार्थना है कि हे अल्लाह! हमें सीधी राह चला.

धर्म की राह पर चलकर ही मनुष्य ज्ञान के उच्चतम शिखर पर पहुंचता है. जिसके जीवन में धर्म का पालन नहीं उसका ज्ञान राक्षसी ज्ञान हो जायेगा. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में पहला पुरुषार्थ धर्म है. अगर अर्थ व काम धर्ममय है तो वे मोक्ष में सहायक हैं अन्यथा अर्थ व काम विनाशकारी हो जायेंगे.

धर्म पाप से रक्षा करता है, धर्म से जीवन सुंदर बनता है, धर्म परमात्मा से मिलाता है और जहां धर्म है वहां ईश्वर का वास है और जहां ईश्वर का वास है वहां विजय है, कीर्ति है, सम्मान है, वहीं सारे सद्गुणों का निवास है.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। वह अपनी अबाध गति से अपने पथ पर निरन्तर चलता ही रहता है। जहाँ तक पढ़ने, सुनने, देखने और मन की गति है, वह सब समय के अधीन है

रहण साणु रंगिजी....

वात्सल्यमूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज

बोलो सनातन धर्म की जय, श्री राम कृष्ण भगवान की जय, श्री शंकर भगवान की जय, श्री लक्ष्मी नारायण भगवान की जय, जगदम्बे मैया की जय, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जय, सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज की जय, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की जय, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की जय, सर्व सन्तन की जय, प्रेम प्रकाश मण्डल की जय, अमरापुर दरबार की जय, गंगा मैया की जय।

निश्शोकमानं गतरागद्वेषं ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं श्री टेऊंरामं शरणं प्रपद्ये

सर्वानन्द प्रदातारं सर्वानन्द विकासकम्
सर्वानन्दावितारं च श्री सर्वानन्दं नमाम्यहम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

''जय गंगे जय गंगे
जय गंगे गोपाल भज मन जय गंगे।
जय गुरुदेव जय गुरुदेव
जय जय सतगुरुदेव भज मन जय गुरुदेव।।''

''श्री राम जय राम जय जय राम''

प्रेम से बोलो सतनाम साक्षी

लाख प्याला भर पिया चढ़ी न मस्ती नैन।
एक बून्द गुरुदेव की मस्त कियो दिन रैन।।
दुनिया चार डिहाड़ा चुटिको,
आहि ख्याल जो खाली खुटिको।
तंहिंते मस्तु न थीउ।।
पीउ तूं प्यारा पीउ, नितु राम नाम रस पीउ।।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

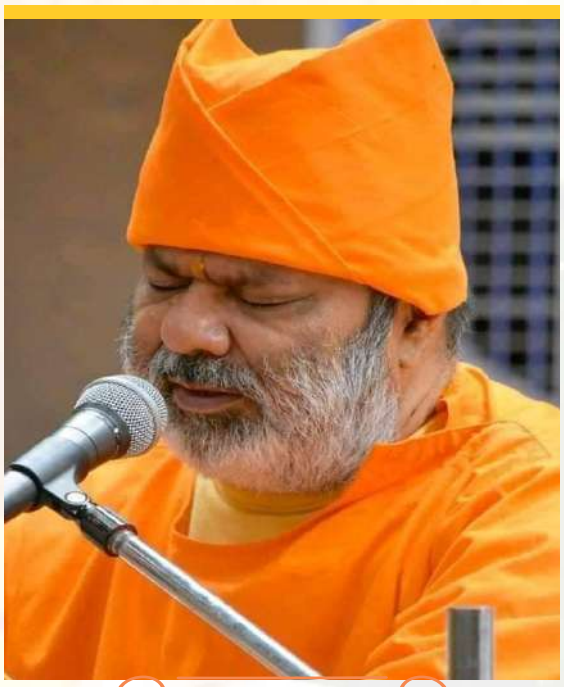

अपनी अमृतमयी वाणीके द्वारा संसार की नश्वरता का ज्ञान कराते हुए फरमा रहे हैं कि-

रहु दुनिया में देह सूधो, पर दुनिया खे दिल न डे।
दिल जे डियण सां दिलबर दिल जी शान्ति वेन्दई छडे।

इसलिए मन को ख्यालों से खाली करके अर्थात् संसार से उपराम करके प्रभु परमात्मा के ध्यान में लगायेंगे तो ही मन को शान्ति मिलेगी, क्योंकि इस संसार सागर में-

हिकिड़ा मच्छ बिया कच्छ, टियों वागूं था विढ़नि।
चोथों कुन कड़िकनि,

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश आहार शुद्धि से व्यवहार शुद्ध होता है और तमोगुणवर्धक नाना प्रकार के माँस-मछलियाँ आदि जो अभक्ष्य पदार्थ हैं, जिनके आहार करने से अन्त: करण मलिन होता है, उन पदार्थों का कभी भी सेवन नहीं करना चाहिए।

पंजो लहिरियूं लालण जूं वेठी गणियां।।
पारि वञण मूंखे आहि ज़रूरी।
विषयूं वाहुड़ वाटुनि ते आहिनि घणा।।

भगवान श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकंद ने श्रीमद्भगवद्-गीता के माध्यम से अपने प्यारे भक्त अर्जुन को समझाया-

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।।

इच्छा और गुस्सा जो रजोगुण से होते हैं, महाविनाशी, महापापी इसे तुम यहाँ दुश्मन जानो.

सत्पुरुषों के सानिध्य में उनके बताये गए मार्ग पर चलने से मन की स्थिति में परिवर्तन होने लगता है, स्वभाव व व्यवहार शीतल होता जाता है.

पवण साणु पाणी पथर भी घसे थो,
वधण साणु विख विख राही भी रसे थो,
पीअण सां नशो नेठि भासे थो भंग में,
रहण साण रंगजी वेन्दे नेठि रंग में।
खणी रोज कख कख पखी घर थो ठाहे,
विहे पाण पंहिंजा बचा भी रहाए,
वञी डिस अदा झिड़क झिड़कियूं तूं झंग में,
रहण साणु रंगजी वेन्दे नेठि रंग में।
रही डिस सदोरा संतनि जे संग में, रहण साण....।।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपनी अनुभव की वाणी श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के माध्यम से समझाया-

पुरुषार्थ पुनि प्रार्थना दोनों साधन सार।
कह टेऊँ जिनके किए मिलहैं मोक्ष द्वार।।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने 'अपने सन्देश' के द्वारा फरमाया- 'पुरुषार्थ के बिगर व्यवहार व परमार्थ का कार्य सिद्ध नहीं होगा.' और सद्गुरु व परमपिता परमात्मा के पावन श्रीचरणों में प्रेम व श्रद्धा से प्रार्थना करने पर जीवन की दिशा बदलने लगती है.

जग में मशहूर नालो हो बालो जंहिंजो
राहगीरनि सां फुरमार कम हो तंहिंजो,
ओचिते हिक डींह सप्त ऋषि पहुंता अची,
तिन जी सिख्या सां पापनि खां वियो सो बची,
अहिड़े पापिनि जो भी थींदो उद्धार आ।
जडुहिं पूरब जन्म जो कोई भाग थो खुले,
हो नसीब थो खुले,
तडुहिं संतनि सचनि जो सत्संग थो मिले।

इसलिए महापुरुषों के बताये हुए पद्चिन्हों पर चलने का प्रयास करेंगे तो लोक-परलोक सुहेला हो जायेगा.

तुम्ही सतगुरु तुम पित माता, तुम ही हरिहर तुम ही विधाता,
हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामि।
जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.....

मिठो मनठार आ (भजन)

तर्ज : कहो ना प्यार है .....

थलु : स्वामी टेऊँराम धरतीअ ते आयो वठी अवतार आ, मिठो मनठार आ।
करे दर्शन जोगीअ जो, भगतन कई जयकार आ, मिठो मनठार आ।।

1. माता कृष्णा देवीअ जे, घर में सतगुरु आयो,
पिता चेलाराम जो भी, साईंअ अडण वसायो,
धन खण्डू आखाड़ धन, धन छन्छर जो वार आ। मिठो मनठार आ।।

2. जन्म बुधी सत्गुर जो, घर घर थी रोशनाई,
प्रेमी सभ हिक बे खे, डियण लगा वाधाई,
मन मुंहिंणी आहे सूरत, सुहिणी ईहा सरकार आ। मिठो मनठार आ।।

3. प्रेम डिसी प्रेमिन जो, आयो सत्गुरु देह धरे,
खाली झोली सभ जी भरी, सत्गुरु पंहिंजी महिर करे,
मंहिमा कयां मां कहड़ी, भरियल सदा भण्डार आ। मिठो मनठार आ।।

4. झूले में झूले थो, सत्गुरु मुंहिंजो सुखदाई,
जन्म वठी कलयुग में, अविद्या ऊंदहि मिटाई,
साक्षी ऐं सत्नाम जी, मन्तर डेई कयो पार आ। मिठो मनठार आ।।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश भगवान, गुरु और देश की भक्ति करना सुगम है परन्तु उसे निभाना कठिन है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

23 जून, जयंती विशेष

परब्रह्म परमात्मा की घोषणा है कि जब जब धर्म का विनाश होने लगता है, तब-तब मैं अनेक रूपों में प्रकट होता हूँ. भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण आदि पूर्णावतार और संत-महात्मा साक्षात् धर्म के अवतार होते हैं और इन्हीं साक्षात् धर्म के अवतारों में श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी एक हैं.

यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोसमीपे बत धर्म हानिम्।
जनाञ्च सर्वान व्यथितान विलक्ष्यः, श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार।।

आचार्यश्री का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् १९४४ को आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि, शनिवार (६ जुलाई सन् १८८७) के दिन प्रातः ५ बजे धर्ममयी माता कृष्णादेवी व पिता श्री चेलाराम के घर हुआ. आचार्यश्री के अवतरण के समय चारों ओर शीतल मन्द सुगन्धित पवन चल रही थी. आनन्द की लहरें उठकर, वर्षा की नन्ही बूंदें, पुष्पों के रूप में बरस रही थीं, प्रकृति ने अपना पूरा आनन्द बिखेर कर वातावरण स्वर्ग के समान कर दिया. कुल-पण्डित आचार्य श्री जयराम जी ने ग्रह नक्षत्र देखकर भविष्यवाणी की **"बच्चा होनहार होगा तथा अवतार के रूप में कहलायेगा।"** नामकरण संस्कार में आचार्यश्री का नाम **'टेऊँराम'** रखा गया.

निर्गुण पूर्ण पारब्रह्म, जो सत् चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

बचपन से ही आपको ईश्वर भक्ति सम्बन्धी वातावरण प्राप्त हुआ. माता ने सर्वप्रथम आपको 'राम' का नाम बोलना सिखाया.

आपके खेलने का ढ़ँग सबसे अलग था, बच्चों को एकत्रित कर स्वयं नेत्र बन्द कर आसन लगवाकर **'राम-नाम'** की धुनि लगाया करते थे, जिससे पूरा वातावरण ही **'राम-मय'** हो जाता था.

आपका चित्त तो सदैव ईश्वर-भक्ति में ही रहता था. प्रतिदिन नदी किनारे अथवा एकांत में जाकर ईश्वर का ध्यान करते रहते, भूख-प्यास से बेखबर अपनी ही मौज में रहकर विचार करते कि मुझे इस संसार सागर से उस पार अर्थात् परमात्मा की ओर जाना है. परमात्मा की ओर जाने में मोह, ममता बाधक बनी हुई है, इन सबका त्याग करके परमात्मा की ओर जाने के लिये सत्पुरुषों का मार्गदर्शन लेना होगा. कर्म करते हुए मन में यही इच्छा है कि मैं **'परमात्मा'** को **'प्यारा'** लगूँ. मात्र १४ वर्ष की अवस्था में आपने स्वामी आसूरामजी महाराज से गुरु दीक्षा प्राप्त की. आपने गुरुदेव के सानिध्य में रहकर भूख-प्यास, दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी आदि कष्टों को सहन करने की शक्ति प्राप्त की.

सत्गुरु के युग चरण की, सेवा करि निष्काम।
स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुख धाम।।

अपने सदुपदेशों में गुरु महाराज जी कहते थे कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है. कुदरत ने इस पृथ्वी पर करोड़ों जीव-जन्तु पैदा किये हैं, उनमें केवल मनुष्य ही अलग-अलग धर्मों में बंटे हुए हैं. क्या पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों में धर्म का विभाजन हुआ है? जब उनमें धर्म का विभाजन नहीं हुआ है तो मनुष्य ने क्यों अपने को अलग-अलग धर्मों में बाँट रखा है. प्रकृति के सभी नियम जैसे गर्मी, सर्दी, वर्षा सभी धर्मों में एक से लागू हैं तो फिर मनुष्य जाति क्यों धर्म के नाम पर अलग-अलग बंटी हुई है.

श्री गुरु महाराज जी द्वारा ऐसे सच्चे धर्म के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि उनके अनुयाइयों में हिन्दू-मुस्लिम आपस में प्रेम-पूर्वक रहने लगे.

सत्य-मार्ग पर लोगों को राह दिखाने हेतु गुरु

महाराज जी ने संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम **'प्रेम प्रकाश मण्डल'** रखा. एक बार अपनी सन्त-मण्डली के साथ देशाटन करते गुरु महाराज जी सिन्ध प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डाआदम शहर के दक्षिण में एक घने जंगल में आकर रुके. इस घने जंगल में जगह- जगह रेत के टीले थे, यहीं पर अपनी मण्डली के साथ कर-सेवा करके २०-२५ झोपड़ियों व सत्संग स्थल का निर्माण कर **'श्री अमरापुर स्थान'** की स्थापना की. यह स्थान डिब॒ के नाम से प्रसिद्ध हुआ.

श्री गुरु महाराज जी ने अपने मूल मंत्र **'सत्नाम साक्षी'** को प्रणाम-मन्त्र के रूप में प्रेमियों को आत्म-सात् करने की दीक्षा दी. **'सत्नाम साक्षी'** महामंत्र आज भी पूरे विश्व में अपनी खुशबू बिखेर रहा है. **'प्रेम प्रकाशी'** एक दूसरे का अभिवादन **'सत्नाम साक्षी'** के सम्बोधन से ही करते हैं.

सद्‌गुरु महाराज जी ईश्वर से यही प्रार्थना करते थे कि सभी को सद्‌बुद्धि दो ताकि मानव सत्यधर्म पर चलते हुए, सच्चे कर्तव्यों का पालन करते रहें और अपने निश्चित जीवन का सफर शान्ति से पूरा कर सके.

श्री अमरापुर स्थान के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि इस पावन स्थान के दर्शन करने मात्र से मनुष्य की वृत्ति सत्कर्मों की ओर बढ़ती जाती है और इस पावन स्थल पर सत्संग का श्रवण करने से मनुष्य अमर हो जाता है.

देखो प्रेमी आय के, अमरापुर स्थान।
संत समागम पाय के, अपना करो कल्यान।।

धर्म के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि धर्म के कारण ही जीवन की उन्नति होती है और सद्‌गति की प्राप्ति होती है, इसलिए जिस धर्म में जन्म लिया है, उसे कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए. प्राचीन समय में अपने धर्म की रक्षा के लिए अनेक ऋषि-मुनियों व धर्मात्मा राजा-महाराजाओं ने शीश- न्यौछावर कर दिये.

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं।
शीश जावे जान दे पर धर्म से हटना नहीं।।

सद्‌गुरु महाराज जी के उपदेशों के माध्यम से अनेक रचनाएँ (कृतियाँ) रची गई हैं, जिनमें प्रमुखतः श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ है, जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, सलोकमाला, सोलह शिक्षाएँ, शान्ति के दोहे आदि हैं. श्री गुरु महाराज जी द्वारा रचित भक्ति-भजन, अमरापुर वाणी पुस्तक में संकलित हैं जो आज पूरे विश्व में अनन्त जीवों को मार्ग- दर्शित कर रही है.

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर श्री अमरापुर स्थान।।

सम्वत् १९९९ के पुरुषोतम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को ५५ वर्ष की अल्प आयु में आचार्यश्री ने प्रेम प्रकाश आश्रम, हैदराबाद (सिन्ध) में आसन मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा. उनकी आत्म-ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गई. पर उनका आलोक आज भी प्रेम-प्रकाशियों का पथ-प्रदर्शन कर रहा है.

समूचे देश-दुनिया में लाखों प्रेम प्रकाशीगण अनेक शहरों-कस्बों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों में नित्य-प्रति सत्संगों के माध्यम से सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं. देश विभाजन के बाद सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपनी तपोस्थली जयपुर में **'श्री अमरापुर स्थान'** की स्थापना की. जो आज **'प्रेम प्रकाश मण्डल'** का **'मुख्यालय'** है. इसी पावन स्थल पर सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का भव्य **'श्री मंदिर एवं समाधि स्थल'** स्थापित है. जहाँ हजारों श्रद्धालुजन प्रतिदिन आकर अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं.

अब तो अमरापुर बनी, अद्‌भुत आलीशान।
जाँका दर्शन करत हीं, आनन्द होय महान।।

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भक्ति और कर्म के अद्भुत उपासक थे. वैदिक सनातन धर्म की रक्षार्थ श्री गुरुदेव भगवान ने अपने साधना-तप-तपस्या के बल अथवा भक्ति- ज्ञान के प्रचण्ड प्रताप से एक नये निराले पंथ का शुभारम्भ किया. उनके द्वारा स्थापित **श्री प्रेम प्रकाश पंथ, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, सत्नाम साक्षी महामंत्र, पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान का निर्माण,** विश्व के इतिहास में अमिट है.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

समय पाकर सभी जड़-चेतन जितने भी जीव हैं वे प्रकट होते हैं और छिप जाते हैं। यह क्रम न जाने कब से आरम्भ हुआ और कब तक चलेगा, यह कोई नहीं जान सकता।

चालीहा व्रत की महिमा- माता कृष्णा ने पाया था मनवाँछित फल

हुआ जगत का कल्याण-बाबा टेऊँराम का था हुआ अवतरण

हरि भक्त के संग से, हरि भक्ती मिल जाय।
कह टेऊँ हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय।

संतों-महापुरुषों का इस धरा धाम पर अवतरण भी अनुपम-विलक्षण-दिव्यतम होता है, उनके आने का उद्देश्य-- मानव के मन को उस अविनाशी प्रभु परमात्मा की ओर मोड़ना है जिसके लिए जीव का इस अमोलक मानव देह में आना हुआ. महापुरुषों के मंगल प्राकट्य के इतिहास इस बात के प्रमाण हैं.

सिंध हिंद के महानतम संत शिरोमणि, महायोगी, युगपुरुष, सर्व उपमा योग्य, धन धन बाबा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है! **सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही 40 दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था. चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान शिव जी ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं. ऐसा आश्वासन (वरदान) पाकर माता कृष्णादेवी ने श्रद्धा भक्ति-भाव से 41 वें दिन उपवास पूरा किया. समय पाकर माता को तपस्या का फल मिला. और हम सबके कल्याणकारक ईश्वरांश मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इस धरा-धाम पर अवतरण लिया.**

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो. इसी श्रद्धा-प्रेम से आज समस्त संसार इस चालीस दिवसीय चालीहा व्रत उपासना पर्व को **14 मई रविवार से 23 जून शुक्रवार** तक मनाने जा रहा है और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठान पूर्वक सत्कार्य भक्तों द्वारा किये जाएँगे. चालीहा का महात्मय बहुत पुराना है. भगवान श्री झूलेलाल चालीहा महोत्सव भी सर्व मनोरथ सिद्ध करने हेतु भक्तों द्वारा मनाया जाता है. साथ ही अनेक देवी-देवताओं के 'चालीसा' भी प्रसिद्ध हैं- शिव चालीसा, हनुमान चालीसा, झूलेलाल चालीसा, दुर्गा चालीसा और साईं टेऊँराम चालीसा आदि. चालीहा महोत्सव के अन्तर्गत इसका नित्य नियम से पाठ करने से मनइच्छित फल की प्राप्ति होती है.

सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह ममस्पर्शी प्रसंग, **"साईं टेऊँराम चालीहा व्रत उपासना"** तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी, इससे **'भक्त और भगवान की प्रगाढ़ता'** के बारे में पता चलता है.

卐 माता पदीबाई को दर्शन देना 卐

यह बात उस समय की है जब माता कृष्णादेवी को गुरुधाम सिधारे अभी एक महीना ही हुआ था कि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की प्यास लिए गौंसपुर के भाई मनाराम की धर्मपत्नी **'माता पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है'** और वह प्रभु परमात्मा- गुरुदेव के दिये अखण्ड नाम का सुमरण कर रही है, उसका संकल्प है कि जब तक सद्गुरु

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश राम-नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं।

स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शन नहीं होंगे तब तक मैं कमरे से बाहर नहीं निकलूँगी और व्रत भी चलता रहेगा. बड़ा ही कठोर तप चल रहा था.ऐसा दृढ़ निश्चय करके ही माता पदी बाई ने चालीहे व्रत की समय-सीमा को पूरा किया. माता पदी बाई ने व्रत पूरा हो जाने पर कमरे से निकलने के लिए घर वालों व पास पड़ौस रिश्तेदारों पंचों के अनुनय विनय को भी अस्वीकार कर दिया. माता पदी बाई भक्ति-भाव मिश्रित मृदुल वाणी में पूर्ण आस्था से बोली कि मेरे हृदय में गुरुदेव के प्रति प्रेम भाव सच्चा है और मेरी गुरुनिष्ठा अटूट है तो मेरे घर **'सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा'** जरूर आएँगे अपनी दासी को दर्शन देने, तब मैं व्रत पूर्ण करूँगी- यह मेरा पक्का विश्वास है.

थक हारकर कंधकोट व गौंसपुर के पंचों ने टण्डो आदम पहुँचकर पूज्य सद्गुरु महाराज जी को सारी बात बताई. करुणानिधान, भक्तों की हर शुभ इच्छाओं को पूरी करने वाले अर्न्तयामी, सर्व ऋिद्धि-सिद्धि के मालिक, भक्तवत्सल, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज! यह बात सुनकर तत्क्षण उठ खड़े हुए और बोले, चलो अभी चलते हैं. माता पदी बाई इतना कष्ट उठाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति कर रही है. तो हम भी उस माता के दर्शन करेंगे.

देखें! श्री गुरुदेव भगवान की कैसी भक्त वत्सलता-निर्मानता! कहाँ माता का संकल्प था कि मैं सद्गुरु महाराज जी के दर्शन करके ही व्रत खोलूँगी और कहाँ पूर्ण महायोगी परम दयालु सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कह रहे हैं कि हम उस माता के दर्शन करेंगे. इसे कहते हैं **भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम !** भक्त की भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा!

श्री गुरुदेव भगवान का मंगल आगमन गौंसपुर में होते ही माता पदी बाई को होता है- सद्गुरु महाराज जी का दिव्य दर्शन! माता पदी कमरे से बाहर निकल कर सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अतीव प्रसन्न मन से कोटि- कोटि वन्दन करती है. उसके नेत्रों से जलधारा बहने लगती है, जैसे भगवान श्रीराम का दर्शन पाकर माता शबरी के प्रेमाश्रु निकले थे. सद्गुरु महाराज जी स्वयं माता के व्रत को खुलवाते हैं और यहीं पर सद्गुरु महाराज जी के सानिध्य में हवन-यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान व भजन-सत्संग भी होता है. 'इसे कहते हैं- भक्त वत्सलता!' सभी को श्री गुरुदेव भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

संसार में हमारे ज्ञान की परीक्षा

हम ज्ञान में कितने उतरे हैं? इसका पता संसार में चलता है. हमारे हृदय में कितनी शान्ति है इसका ज्ञान तब होता है जब कोई हमारा तिरस्कार करता है. जब हम ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जो हमें पसंद नहीं तब हमारा प्रेम खो जाता है. दूसरे के सुख को देखकर अगर ईर्ष्या मन में उठती है तो इसका मतलब कि द्वैत अभी बना हुआ है. इस प्रकार यह समग्र संसार हमारे ज्ञान की परीक्षा स्थली है. पग पग पर हम इससे शिक्षा लेकर अपने जीवन का निर्माण कर सकते हैं.

बाहर वही दिखता है जो हमारे भीतर है यदि भीतर द्वेष भरा है तो बाहर शत्रु दिखेगा और यदि भीतर लबालब प्रेम है तो बाहर सब मित्र दिखेंगे. वास्तव में यह संसार हमारे मन की कल्पना ही तो है. मन से ही द्वैत है, मन जब अमन हो जाता है तो अद्वैत है. हम संसार में स्वयं को मजबूत बनाने के लिये ही आते हैं. यह संसार एक व्यायामशाला है. यहां की प्रत्येक घटना प्रत्येक बात में हमारे ज्ञान की परीक्षा होती है. यदि हम स्वयं शुद्ध स्वरूप में स्थित हैं तो हमारे व्यवहार में भी शुद्धि होगी और अगर हम बार-बार विक्षेप में आते हैं तो इसका अर्थ है हमारे ज्ञान में कमी है, हमें अभी और साधना की आवश्यकता है. अगर कोई काम, क्रोध और लोभ आदि से भरा हुआ है और स्वयं को ज्ञानी कहता है तो वह अपने को ही धोखा देता है, ये विकार जीवन्मुक्ति के आनन्द का नाश कर देते हैं और ज्ञान को ढक देते हैं. स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी कहा करते थे- 'वही व्यक्ति पूर्ण है जिसका चरित्र उज्जवल, मन भक्ति भाव से भरा हुआ और बुद्धि अद्वैत ज्ञान से पूर्ण है.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश सब दुःखों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति चाहो तो अपनी दावा छोड़ो।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की गुण-महिमा के पावन प्रसंग

महापुरुषों के आज्ञा की अवहेलना न करें

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का आत्मानंद से बहुत स्नेह था. वे श्री अमरापुर दरबार (सिंध) में प्रातः कथा पढ़ते थे. इनके कथा पढ़ने का ढंग अत्यंत सरल व मधुर था. आत्मानंद जी कथा पढ़ते थे और महाराज जी उसका अर्थ समझाते थे.

एक दिन की बात है गर्मियों के दिन थे रात्रि का समय था, वहाँ एक राणो भगत करके रहते थे. महाराज जी ने आत्मानन्द को किसी कार्यवश राणे भगत के पास जाने की आज्ञा दी. आत्मानन्द आज्ञा पाकर जाने के लिए तैयार हुआ. जाते वक्त उसने हाथ में एक मोटी लठ (लठिया) उठाई. महाराज जी ने जब उसके हाथ में लकड़ी देखी तो पूछा- क्यों भाई, इतनी बड़ी मोटी लकड़ी क्यों उठाई है?

आत्मानन्द ने कहा- महाराज जी, जाते समय विचार आया कि रास्ते में साँप, बिच्छू आदि जीव जन्तु घूमते रहते हैं, कहीं वे काट न लें. इसीलिए सुरक्षा के लिए ये लठ उठायी है. महाराज जी ने कहा- नहीं बाबा, हम यहाँ बैठने से पहले ही इन साँप आदि से बात करके बैठे हैं कि आप हमें नहीं सताएँगे और हम भी आपको नहीं सताएँगे. अतएव तुम लकड़ी मत ले जाओ. आत्मानन्द ने उस समय तो तुरंत लकड़ी को वहीं रख दिया. फिर जब वह नीचे गया तो मन में पुनः भ्रम जागा, डर भी लगा. वापस आकर उसने फिर से लकड़ी उठा ली.

अब वह लठ हाथ में लेकर जाने लगा तो रास्ते में साँप ने उसे डँस लिया. और वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा. संतों ने आत्मानन्द से कहा- अरे भाई, आपको महाराज जी ने लकड़ी उठाने से मना किया था फिर लकड़ी क्यों उठाई?

जब महाराज जी और जीव जन्तुओं का आपस में समझौता किया हुआ था कि आप हमें कुछ नहीं करेंगे और हम भी आपको कुछ नहीं करेंगे तो फिर? जब इसके जवाबदार महाराज श्री बैठे हुए हैं तो आपको इसकी क्या चिंता? तुमने आज्ञा की अवहेलना की. जब सारे संत उसे (आत्मानन्द को) उठाकर महाराज जी के पास ले आए तब करुणावत्सल महाराज श्री ने अपनी कृपा की और कहा- भाई, इन्हें प्याज खिलाओ और देशी घी पिलाओ. महाराज जी की आज्ञा अनुसार ऐसा ही किया गया. महापुरुषों द्वारा बताया गया अमृत प्रसाद व भगवत् कृपा से थोड़ी ही देर में आत्मानन्द के ऊपर जो सर्प दंश का प्रभाव था वह धीरे-धीरे प्रभावहीन होने लगा और उसे होश आने लगा.

सीख : बड़ों की आज्ञा में अपनी नहीं चलानी चाहिए.

कृपा निधान

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे. मार्ग में एक सूरदास बालक जो मीठे स्वर में भजन गाकर भीख माँग रहा था. करुणा वत्सल गुरुदेव भगवान की दृष्टि उस बालक पर गई.

स्वामी जी ने बालक के पास जाकर उसके सिर पर वात्सल्य भाव से हाथ फेरा और बड़े दुलार-प्यार से पूछा- बेटा! यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो? बालक ने कहा- बाबाजी! रोटी खाने के लिए, अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा, तो घर वाले मुझे भोजन नहीं देंगे.

सद्गुरु महाराज जी को उस पर दया आ गई. महापुरुष तो कृा निधान दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का दुःख देखा नहीं जाता, तब स्वामी जी ने कहा- बेटे! केवल रोटी के लिए ये हल्का कार्य (भीख माँगना) कर रहा है. चलो हमारे साथ आश्रम पर, सेवा करो और भजन करो व भरपूर भोजन-प्रसाद पाओ. उसे आश्रम पर ले आये.

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत-सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- कौन इसका ध्यान रखेगा, कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणानिधान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- सभी में प्रभु परमात्मा निवास करते हैं. हम सब उसी की संतान हैं. इस बालक की सेवा 'मैं' स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा. देखो, दिव्य महापुरुषों की करुणा! कितना स्नेह, कितना दुलार!

कहते हैं कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारंगत गायक बन गया और जीवन भर श्री गुरु दरबार की खूब सेवा करता रहा व नित्य नये-नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को सुनाता. ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

संत वचन में शक्ति

सिन्ध प्रदेशके टण्डेआदम शहर में रेत के टीले के

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी परमात्मा सर्व शक्तिमान हैं। उनके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए उनकी शरण लें तो आपके दुःख दर्द दूर हो जायेंगे।

ऊपर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की बनाई 'श्री अमरापुर दरबार (डिब्र)'. बात उस वक्त की है जब खाने-पीने का वहाँ अभाव हुआ करता था. आश्रम पर निर्माण कार्य प्रारम्भिक अवस्था में था. लोगों को वहाँ पहुँचना दुष्कर सा प्रतीत होता था. उसी काल में एक बार खाने के लिए आश्रम पर कुछ भी नहीं था. भूखसे सभी संत-सेवाधारी व्याकुल हो रहे थे. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी निर्विकल्प समाधि में लीन थे. सभी संत सेवाधारी स्वामी जी के पास आए और कहा- हे प्रभु! आज आश्रम पर भोजन बनाने के लिए सीधा (सामग्री) नहीं है और सभी को भूख भी बहुत सता रही है. महापुरुषों की अपनी मौज होती है. स्वामी जी ने कहा- एक देग (तपेले) में जल व आश्रम की रेत डालकर अग्नि पर रख दो और ढक्कन ढक दो. समय पर 'सत्नाम साक्षी....' बोलकर भोजन पंगत शुरू कर देना. कौन समझे संत- महापुरुषों की अद्भुत लीलाओं को. संत वचन में होती है शक्ति. देखते-देखते ही समय पर उस रेत-पानी से नमकीन चावलों की देग (तपेला) तैयार हो गया. यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ. सभी ने भरपेट भोजन-प्रसाद पाया. संत महापुरुषों की ऐसी अक्षुण्ण शक्ति को समझ पाना बड़ा कठिन है.

अतिथि देवो भवः

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में निर्मानता के साथ-साथ सेवा का भी विशेष गुण था. किसी भी सेवा कार्य को करने में वे कभी संकोच, हिचकते या शर्माते नहीं थे. पद-प्रतिष्ठित होने पर भी उनमें सेवा का वही भाव उनके जीवन काल में देखा गया.

एक बार दोपहर को कुछ अतिथि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सत्संग श्रवण करने के लिए श्री अमरापुर दरबार पर आये. वे लोग सद्गुरु महाराज जी से परिचित नहीं थे, उनका यश-कीर्ति सुनकर ही दर्शनों के लिए खिंचे चले आये थे. उस समय सभी संत-सेवाधारी विश्राम कर रहे थे, केवल सद्गुरु महाराज जी ही जाग रहे थे. वे लोग स्वामी जी से मिले और पूछा- स्वामी टेऊँराम जी कहाँ हैं? हम सब उनके दर्शनों के लिए आये हैं.

स्वामी जी ने कहा- पहले आप भोजन प्रसाद ग्रहण करो, विश्राम कर लो. शाम को दर्शन कर लेना. उस समय स्वामी जी ने अपने हाथों से साफ-सफाई कर भोजन खिलाया, जल पिलाया और आराम के लिए आसन दिया. दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता है किन्तु स्वयं उस पर चलना बड़ा कठिन.परन्तु स्वामी जी में कथनी और करनी एक समान थी.

सायंकाल वे अतिथि जब स्वामी जी के दर्शन करने पहुँचे तो देखकर हैरान रह गये. अरे! इन्होंने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी. भोजन खिलाया, जल पिलाया और आसन दिया. ऐसे निर्मानी संत-सत्पुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य-धन्य हो गये.

महापुरुषों की अवधूती मस्ती

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर वृक्ष के छाँव तले भजनानन्द की मस्ती में बैठे थे. अवधूती मस्ती का अनोखा आलम! मुख मण्डल पर दिव्य आभा, भक्ति-तपस्या का तेजपुंज! कौन समझे उन संत-फकीर-साईं मुर्शिदों की रमझ को.

उसी समय आया एक गवैया सूरश्याम केवलराम भक्त. उस भक्त के पास थी संगीत की अद्भुत कला, गाने- बजाने में था निपुण. उसने साईं के सामने बहुत ही मधुर स्वर में भजन गाए.

भक्ति-भाव के भजन सुन साईं टेऊँराम बाबा बहुत प्रसन्न हुए. उस समय श्री साईं टेऊँराम बाबा ने हृदय से प्रसन्न होकर केवलराम से कहा- हे भगत जी! आज हम तुम्हारे भजन भाव से बहुत प्रसन्न हुए हैं. माँग लो, आज जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें अवश्य ही मिलेगा. परन्तु कहते हैं न कि जिसके भाग्य में न हो या फिर जिसे संत महापुरुषों से माँगना नहीं आता हो, फिर भला उसे कुछ कह सकते हैं. उन भोले-भाले भक्तों को क्या मालूम कि उस समय तपस्वी महापुरुषों की स्थिति कितनी अद्भुत होती है. उस क्षण जो भी माँगा जाये वह अवश्य ही मिल जाता है. परमात्मा भी उस वचन को टाल नहीं सकते. फिर समय निकल जाने पर कुछ भी हाथ नहीं आता.

बस! फिर क्या था उस समय उस भोले-भाले सूरश्याम भक्त केवलराम को साईं टेऊँराम बाबा जी से माँगना नहीं आया. और उनसे एक तुच्छ वस्तु गर्म कोट माँगा. अगर थोड़ा सोच समझ या विचार करके सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नेत्र-ज्योति (आँखों की रोशनी) माँग लेता तो वह भी उसे आज अवश्य मिल जाती और उसका जीवन सँवर जाता. उन नेत्रों से भगवान व श्री गुरुदेव के दर्शन भी करता. पर उस समय कृपादृष्टि का लाभ हर कोई नहीं ले पाता. महापुरुषों की उस समय की स्थिति बड़ी अद्भुत होती है.

कुछ समय बाद वैराग्यमयी नज़रों से निहारकर साईं टेऊँराम बाबा जी ने कहा- अरे भाई केवलराम! तुमने ये क्या तुच्छ वस्तु माँग ली, अरे! तुम्हें माँगना भी नहीं आया. आज अगर तुम नेत्र (आँखों की ज्योति) भी माँगते तो वह भी तुम्हें प्राप्त हो जाती. पर तुम्हें आज माँगने भी नहीं आया. किन्तु अब वह बन्दगी वाली स्थिति, समय, घड़ी हाथ से निकल गई. अर्थात् बड़ा सुन्दर अवसर गँवा दिया.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्र), जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

**माता-पिता से मांगने वालों को भिखारी नहीं कहते,
पर दूसरों से मांगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है।**

सत्संग-सेवा-सुमरण का अनोखा संगम चैत्र मेला 2023

श्री प्रेम प्रकाश पंथ दिवाकर आचार्य अनन्तश्री विभूषित, मंगलमूर्ति, मूर्तिमान ब्रह्मस्वरूप सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज द्वारा १०२ वर्ष पूर्व लोक कल्याण हितार्थ मौसम (ऋतु), समय को ध्यान में रखते हुए सर्व साधारण लोगों के लोक- परलोक हितार्थ इस महानतम 'चैत्र मेले' की स्थापना की गई थी. मेले का प्रथम मुख्य उद्देश्य यही था कि समस्त प्रेमियों को सहजता अति सुलभता से संत समागम **(सत्संग)** का लाभ मिले, जिससे वे पूज्य संतों के पावन श्रीमुख से निःसृत ज्ञानगंगा में डुबकी लगायें और अपने इस अनमोल मानव जीवन में सत्मार्ग की ओर अग्रसर होकर प्रभु परमात्मा का साक्षात्कार कर सकें. दूसरा उद्देश्य था- आत्म कल्याण के इच्छुक प्रेमियों को स्वानुभूति की प्रथम सोपान (सीढ़ी) यानि **सेवा** जो कि परम साधना स्वरूप है, करने का सौभाग्य मिल सके. मंगलमूर्ति आचार्य श्री के द्वारा तीसरे उद्देश्य के रूप में इस पावन विचारधारा को रखा गया था कि इन विशेष मनवाँछित दिवसों पर इस पावन गुरु धाम पर प्रेमीजन पूज्य गुरुदेव जी से प्राप्त दीक्षा (नाम) का **सुमरण** साधना करके शाश्वत् आनन्द (सुख-शान्ति) का अनुभव प्राप्त कर सकें.

इसी त्रिस्तरीय जनकल्याणार्थ लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ही पूज्य आचार्यश्री जी द्वारा स्थापित 'चैत्र मेला' प्रतिवर्ष निरंतर बड़ी ही भव्यता के साथ मनाया जाता है.

इस वर्ष १०२वें चैत्र मेले का आयोजन परम पावन श्री अमरापुर स्थान, जयपुर जो प्रेमियों में डिब के नाम से भी विख्यात है, में ०४ से ०८ अप्रेल २०२३ मंगलवार से शनिवार तक बड़ी भव्यता के साथ आनन्दमयी वातावरण में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष हाजरांहजूर पूज्य गुरुवर स्वामी श्री भगत प्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता व संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, संत अनन्तप्रकाशजी (पूना), संत नामदेवजी, संत हरिओम लालजी, संत मोनूरामजी, संत श्यामलालजी (कोटा),संत शम्भूलालजी(ब्यावर), संत परसराम जी (जलगांव), संत शंकरलालजी (मुम्बई), संत लक्ष्मणलाल (अमदाबाद) जी, संत जीतूरामजी(चैन्नई),संत प्रतापलालजी(मुरेना), संत सहजानन्द जी, संत हेमन्तलालजी, संत नवीन जी, संत गुरुदास जी, संत ढालूराम जी, संत कमललाल जी, संत हरिदास, संत हरीशलाल जी (जयपुर), संत भोलाराम जी (कानपुर), संत छोटूराम जी (डबरा), संत कमललाल (गांधीधाम), संत हिमांशु (हरिद्वार), संत हरिराम (खैरथल), संत महेश (सीकर), संत लोकेश (धमतरी), संत भावनदास (अयोध्या), संत सुंदरलालजी, संत टेकचन्द, दादी कु. भगवन्ती देवी (आगरा), सांई श्री सुरेन्द्र कुमार जी (सतरामदास दरबार, अयोध्या), श्री बसन्त कुमार (दादी लीलावन्ती आश्रम, जयपुर), भगत जीतूराम जी (मालवीय नगर, जयपुर), संत मण्डल की पावन उपस्थिति में मनाया गया. इस शुभाशुभ अवसर पर सत्संग-सेवा-सुमरण की त्रिवेणी में गुरुनगरी जयपुर के हजारों प्रेमियों के साथ देश दुनिया के हजारों से अधिक साधक जिज्ञासु प्रेमीजन सम्मिलित हुए. आइये हम भी इस त्रिवेणी के महासागर में डुबकी लगाने का सद्प्रयास करें-

सत्संग : इस घोर कलिकाल में परमार्थ का सबसे सुंदरतम सरल साधन सत्संग! सत्संग को ही आचार्यश्री ने चैत्र मेले का प्रमुख लक्ष्य बनाया था. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आधुनिक समय में भी किस प्रकार सत्संग के लिए हजारों हजार भक्त लालायित रहते हैं- इसे सहजता के साथ चैत्र मेले में देखा जा सकता है. प्रातः ७ से ११ व दोपहर ३:३० से रात्रि ८ बजे तक सत्संग की ज्ञानधारा के अंतिम घंटे में तो इस कदर प्रेमियों की भीड़! अहा! जो जहाँ पर था- सत्संग की अमृतधारा में आंकठ नहाने को आतुर दिखाई पड़ रहा था, चाहे वह सत्संग सभालय में हो या बाहर गैलरियों में अथवा क्यों न बाहर सड़क पर अपार भीड़ के चलते रोक दिया गया हो, शान्त चित्त एकाग्र भाव से पूज्य गुरुदेव भगवान के बड़ी स्क्रीन पर दर्शन करते हुए, सत्संग का अमृतलाभ ले रहा था.

सेवा : सेवा साधना का तो क्या कहना! गुरुनगरी जयपुर के भाग्यप्रवर सेवाधारी व देश दुनिया के सैकड़ों प्रेमी इस महायज्ञ में विभिन्न प्रकार की सेवाएँ करते हुए अपने जीवन को सफल बनाते दिखाई पड़ रहे थे. कहते हैं कि सेवा में

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिस किसी को भी प्रभु परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाता है, तो फिर उसको जाति-पाति और वर्णाश्रमों के सुदृढ़ बन्धन भी कभी बांध नहीं सकते।

किसी भी प्रकार का जिसमें संकोच नहीं होता है अर्थात् लज्जा का अनुभव नहीं होता है वही इस सेवा साधना का सफलतम सेवक माना जाता है ऐसा महापुरुषों व शास्त्रों का कथन है. इसी कथन की साकारता इस चैत्र मेले में अनेक ऐसी जगहों पर देखने को मिल रही थी कि जिस कार्य को करते हुए साधारणतः अच्छा नहीं लगता है उसे भी समर्पित सेवाधारी बड़ी तनमयता से करते दिख रहे थे. ऐसे प्रसंग तो शास्त्रों में अनगिनत पढ़ने को मिलते हैं लेकिन वर्तमान भौतिक काल में ऐसे उदाहरण! सचमुच वर्णनातीत है ऐसे सेवकों की गुरुभक्ति सेवा-साधना!

सुमरण : सद्गुरु भगवान की कृपावृष्टि से जिज्ञासुओं को नामदान मिलता है- 'नाम' का ध्यान-जप घर पर भी करते ही हैं लेकिन उसका सुमरण-जप गुरुदरबार में वो भी गुरुधाम में हो तो उसका फल अक्षय गुणित हो जाता है- ऐसा सत्पुरुष व शास्त्र कहते हैं. तो इस बात को समझने वाले सैकड़ों गुरुभक्त गुरुधाम में समाधि स्थल व अन्य स्थान पर नाम जप सुमरण करते दिखाई पड़ रहे थे.

प्रेमप्रकाशियों का महाकुम्भ महापर्व- चैत्र मेले का जितना वर्णन लिखा जाये, थोड़ा है. विशालतम महापर्व के प्रमुख कार्यक्रमों व मुख्य बातों को शब्दों के माध्यम से बताने का सुप्रयास है-

मेले की सुव्यवस्थाके लिए मेले की स्थापना काल से ही मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज द्वारा संतों सेवाधारियों की, मेले की पूर्व संध्या अर्थात् एक दिन पहले बैठक करके, सेवाओं/जिम्मेदारियों को बांटा जाता था. उसी परम्परा का गत 102 वर्षों निरंतर निर्वहन किया जा रहा है. इसी के अन्तर्गत 2 अप्रेल रात्रि 8 बजे पूज्य गुरुदेव भगवान के पावन सान्निध्य में पूज्य संतों सेवाधारियों की एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें संतों सेवाधारियों को चैत्र मेले की सेवाओं की जिम्मेवारी दी गई. बैठक के अंत में पूज्य गुरुदेव भगवान द्वारा समस्त सेवाधारियों को नम्रता प्रेम प्यार मधुरता से पूज्य संतों आगन्तुक श्रद्धालुओं की सेवा करने की समझाइश दी गई साथ ही पूज्य गुरुदेव भगवान ने भीड़ नियंत्रण के लिए भी जिम्मेदार सेवादारियों को आगाह किया.

कार्यक्रमों/खास बातों पर एक नज़र

- चैत्र मेला प्रारम्भ होने के एक दिवस पूर्व सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की संत मण्डली के प्रमुख संत अवधूत परम पूज्य स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की पुण्यतिथि (वर्सी) उत्सव मनाया गया. वर्सी उत्सव के पाठों के भोग पश्चात् चैत्र मेले के पाठों श्रीमद्भगवत्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का शुभारम्भ हुआ. वर्सी उत्सव पर विशेष रूप से ब्रह्मभोज का विशाल आयोजन खास रहा,
- चैत्र मेला अवसर पर श्री दरबार साहब की झिलमिल करती अनुपम शृँगारित छटा ने गुरुनगरी के व्यस्ततम मार्ग से गुजरने वाले लाखों राहगीरों को भी विस्मित सा कर दिया सायंकाल के बाद तो विद्युतीय रंग-रंगीले प्रकाश में दिन जैसा आभास हो रहा था.
- चैत्र मेले में दिन की शुरूआत भोरकाल में खैरथल मण्डली द्वारा परम्परागत हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी के साथ होती थी, जो निरंतर पाँचों दिन जारी रही.
- चैत्र मेले के अवसर पर श्रीमंदिर व श्री समाधि साहब का पुष्पों के विविध प्रकारों से शृँगार मंत्रमुग्धकारी रहा.
- चैत्र मेले में प्रतिदिन द्विसत्रीय सत्संग सभा की शुरूआत प्रातः सात बजे नित्य नियम प्रार्थना गायन से होती व दोपहर बाद ३:३० बजे से होती जो प्रातः ११ बजे व रात्रि ८ बजे पूज्य सद्गुरु महाराज जी के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञानामृत की रसधारा के साथ समापन होती.
- चैत्र मेले की सत्संग सभा में प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव भगवान की अमृतमयी सद्वचनो को हृदयगंम करने का अवसर देश दुनिया व गुरुनगरी जयपुर के हजारों हजार भक्तों को मिला.
- चैत्र मेले के प्रथम दिवस ०४ अप्रेल मंगलवार को प्रातः-कालीन सत्संग अमृत के बाद १०:३० बजे से ११:३० बजे तक हवन-यज्ञ श्री अमरापुर यज्ञशाला में हुआ इसके बाद श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन का पारम्परिक पंथीय कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ. इन कार्यक्रमों में हजारों की संख्या में भक्तों ने भाग लिया. ध्वजा गीत व साईं टेऊँराम मंगलगान पर अत्यंत उत्साहित होकर बैंडबाजों की तेजस्वर धुनों पर हजारों भक्त नाचे-झूमे. संत श्री कमललाल गांधीनगर द्वारा परम पावन श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजा को यथा स्थान स्थापित किया गया।
- चैत्र मेले की विशाल शोभायात्रा ०४ अप्रेल को गोधूलि वेला में चार बजे श्री अमरापुर दरबार से हाजरांहजूर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डल की पावन सानिध्यता में निकली. लीला पुरुषोत्तम भगवान के विविध लीलावतारों के

साथ आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के लीला प्रसंगों को दर्शाती सजीव झाँकियों के साथ लगभग २० हजार से भी अधिक की संख्या में शामिल भक्तों का जन-सैलाब देखकर मन आनन्दित हो उठा.

• चैत्र मेला शोभायात्रा में हमारे प्यारे गुरुदेव भगवान, पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, संत हरिओमलाल जी एवं संत मोनूराम जी के साथ रथ पर आरूढ़ होकर सहज दर्शनानन्द से नगरवासियों को कृतार्थ कर रहे थे.

• एक किलोमीटर की लम्बाई में फैली चैत्र मेला शोभायात्रा का लगभग ८-१० किलोमीटर परिक्रमा मार्ग पर जयपुर नगर की सैकड़ों संस्थाओं जिसमें सामाजिक व्यापारिक संस्थानों, संगठनों एवं धार्मिक संस्थाओं द्वारा पूज्य सद्गुरु महाराज, संत मण्डल को पुष्पमालाएँ पहनाकर व गुलाब के फूलों की वर्षा करके स्वागत किया गया. इस अवसर पर सभी स्वागत स्थलों पर विविध खाद्य पदार्थ, पेयजल व शीतल पदार्थों का वितरण भी किया जाता रहा. आश्चर्य की बात यह रही कि हर १००वें कदम पर पूज्य महाराजश्री का स्वागत किया जा रहा था. इस शोभायात्रा में सबसे प्रिय, स्वागत योग्य एवं अनुकरणीय बात यह देखने को मिली कि शोभायात्रा गुजरने के पश्चात् स्वागत स्थलों पर फैले हुये कचरे को सेवाधारियों द्वारा पूर्ण मनोयोग व श्रद्धाभाव से समेटकर शोभायात्रा के सबसे पीछे चल रही ट्रेक्टर ट्राली में डालकर सड़क को साफ-सुथरा किया रहा था। इस अनुपम सेवा की प्रशंसा सभी जयपुर वासियों द्वारा की जा रही थी साथ ही साथ जयपुर नगरवासियों को यह भी कहते हुए सुना जा रहा था कि इस तरह का कार्य शहर में निकलने वाली प्रत्येक शोभायात्रा के व्यवस्थापकों को करना चाहिये।

• चैत्र मेला शोभायात्रा लगभग चार घंटे तक गुरुनगरी जयपुर की परिक्रमा करके रात्रि ८ बजे श्री अमरापुर दरबार पहुँचकर सत्संग सभा में परिणित हो गई.

• चैत्र मेला शोभायात्रा में हाथी, घोड़े, ऊँटों का लवाजमा, सुन्दर बैण्ड, जीया बैण्ड, प्रकाश बैण्ड के साथ शहनाई ढोल वादन द्वारा भक्तिमय गीत भजनों पर आध्यात्मिक संगीत स्वर लहरियों का आनन्द प्रेमियों को मिला.

• चैत्र मेला में देश दुनिया से आई हुई प्रेम प्रकाश मण्डलियाँ अपने अपने शहर के नाम का बैनर लिये हुए चल रही थीं. अनेकों शहरों के प्रेमी अपनी मण्डली द्वारा निर्धारित एकसी वेशभूषा में चलते हुए एक अनुपम दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे।

• शोभायात्रा में साईं टेऊँराम संकीर्तन मण्डली द्वारा साईं टेऊँराम संकीर्तन किया जा रहा था.

• चैत्र मेले में राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, असम, प. बंगाल, मेघालय, झारखंड, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, बिहार, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तामिलनाडु प्रान्तो के सैकड़ों शहरों के हजारों से अधिक की संख्या में प्रेमी व हांगकांग, दुबई, स्पेन, अमेरिका, मनीला, बैंकाक, आस्ट्रेलिया, इण्डोनेशिया आदि से भी सैकड़ों प्रेमी चैत्र मेले में सम्मिलित हुए.

• चैत्र मेले में भोजन भण्डारा श्री दरबार साहब के पीछे की ओर विशाल भूखण्ड पर पूज्य संत-मण्डल के निर्देशन में सैकड़ों रसोईये तैयार करते दिखाई पड़ रहे थे.

• चैत्र मेले में बाबा टेऊँराम जी महाराज का भोजन भण्डारा दिन भर में लगभग तीस से चालीस हजार तक की संख्या में प्रेमियों को ५ स्थानों पर खिलाया जा रहा था. सत्संग सभालय (जहाँ पर एक साथ तीन हजार से अधिक प्रेमी एक ही पंगत में बैठ रहे थे), प्रसादालय (एक पंगत में ५०० से अधिक प्रेमी), यात्री निवास के बेसमेंट (जहाँ पर एक पंगत में हजारों श्रद्धालु बैठकर भोजन प्रसादी पा रहे थे), के अलावा पहिली मंजिल पर (जहाँ एक पंगत में लगभग ५०० प्रेमी भोजन पा रहे थे) एवं बाहर सड़क पर भी सैकड़ों भक्तों को बिठाकर सेवाधारियों द्वारा सस्नेह त्रैलोक्य में सुस्वादु भोजन भण्डारा प्रेमियों को खिलाया जा रहा था. इस कुणके (साईं टेऊँराम भगवान का प्रसाद) को ग्रहण करने के लिए जयपुर हो या बाहर से आये प्रेमी इतने लालायित थे कि इसके लिए हो रही कठिनाईयों को भी बड़े ही प्रेमभाव से सहन कर रहे थे. लेकिन सबके हृदय में यही भाव था कि बस कुणके को पाना है।

• चैत्र मेले की विशालता का अनुमान इससे ही सहज में लग जाता है कि श्री दरबार परिसर में श्रद्धालुजनों का इतना सैलाब रहता था कि चलने के लिए एक दूसरे से सटकर चलना पड़ता था.

• इस मेले में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पूज्य गुरुदेव भगवान संतों के दिशा निर्देशन में भीड़ नियंत्रण सतर्कता समिति बखूबी सजग रही. भीड़ का दबाव अधिक होने पर जो कि पहले दिन से निरंतर ही रहा, मुख्य द्वार बंद करके प्रेमियों को बाहर ही रोककर सड़क पर फर्श बिछाकर बिठाया जाता था, वहाँ पर बड़ी-बड़ी स्क्रीन्स् पर सत्संग दर्शन का निर्बाध प्रसारण हो रहा था. भीड़ नियंत्रण के लिए अंतिम दिन पल्लव के पश्चात्,

बैण्डवादकों को भी इसलिये बाहर रोक दिया गया जिससे कि अंदर किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो. परिसर में भीड़ का दबाव कम होने पर ही बाहर से प्रेमियों को अंदर छोड़ा जा रहा था.

• मेले में प्रेमियों की सेहत का ख्याल रखने के लिए गुरुभक्त डॉ. वासुदेव ठाकुर जी 'स्वामी सर्वानन्द अस्पताल' जो कि गुरुदेव भगवान के निवास कक्ष के समीप थी एवं स्वामी टेऊँराम पॉलीक्लीनिक के वरिष्ठ चिकित्सकों के साथ नवीन यात्री निवास के ग्राऊण्ड फ्लोर पर सतर्क थे. तो चलित चिकित्सा सहायता के रूप में टोंक के डॉ. कन्हैयालाल बदलानी अपनी सेवाएँ दे रहे थे.

• चैत्र मेले में संत मण्डल के अलावा वचनामृत वरखा करने वाले विद्वान, कवि, ओजस्वी वक्ता, भगत व श्री प्रेमप्रकाशी भजन मण्डलियाँ- सुविख्यात साहित्यकार- भगत माणिकमुक्त (खैरथल), भगत लखमीचन्द कव्वाल (कोटा), भगत दीपक (दिल्ली), भगत जीतू भोजराज (जयपुर), भगत सोनू (अजमेर), भगत हरदास (आगरा), भगत महेश प्रतापराय (अजमेर), श्री भागवत व ओम (उल्हासनगर), भगत ढोलण शर्मा, श्री वरियलदास (चांपा), श्री सोनू श्रीमुक्त (जयपुर), श्री बल्लू ढोलक वाला, श्री पुनीत माणकलाल (खैरथल), श्री जीवतराम (अहमदनगर), भगत प्रकाशलाल (अमरावती), श्री अमरलाल (बांदा) के अलावा दीदी भगवंती (आगरा), दादी पदमादेवी (जयपुर) ने सद्गुरु भगवान की महिमा का गुणगान किया.

प्रेम प्रकाश भजन मण्डली- जकार्ता(श्री गोप सामतानी), दुबई मण्डली(श्री कैलाश मनवानी), हांगकांग मण्डली(श्री श्यामलाल जी), स्पेन मण्डली (श्रीमती बिंदू), बैंकाक मण्डली, अमेरिका मण्डली ने बड़े ही रसमयी आवाज में गुरु महिमा के भजन गायन करके संगत को आनन्दित किया. देश के विभिन्न शहरों की श्री प्रेम प्रकाश भजन मण्डलियों के भजनीक महिला पुरुषों ने भी गुरुगान करके मौजानन्द कराया. स्पेन मण्डली द्वारा प्रस्तुत सशक्त नाट्य मंचन ने भी संगत को बाबा टेऊँराम के स्वर्णिम काल का आभास करा दिया.

@ चैत्र मेले में ०७ अप्रेल को प्रातःकालीन सत्संग सभा में रखे गये पाठों का पारायण (भोग) सम्पन्न हुआ.

@ चैत्र मेले की समाप्ति पल्लव (सिंधी समाज में झोली फैलाकर प्रभु परमात्मा के आगे लोक हितार्थ प्रार्थना करना) के साथ ०८ अप्रेल को प्रातः सात बजे, सम्पन्न हुई.

@ चैत्र मेले की पूर्णाहुति के बाद जब गुरुदेव भगवान के पावन श्रीमुख से मंगल बधाई गान व साईं टेऊँराम धुनि का गायन हुआ तो सारी संगत अपने-अपने स्थान पर उठकर नाचने- झूमने लगी इधर पूज्य गुरु बाबा व संत मण्डल भी मंच पर खड़े होकर संगत को दर्शन देने लगे ऐसे लगने लगा जैसा वैकुण्ठ सम इन पूर्णानन्द मय क्षणों में सब आत्म-विभोर होकर साईं टेऊँराम भगवान में समाहित से होने लगे हैं.

@ चैत्र मेले के मध्य में जयपुर स्थित विश्वविख्यात श्री गोविन्ददेव जी मन्दिर के माननीय सेवाधारी (प्रतिनिधि) द्वारा पूज्य महाराज श्री को दुशाला व प्रसाद भेंट किया गया साथ ही पूज्य महाराज श्री ने भी माननीय सेवाधारी को शाल ओढ़ाकार साधुवाद ज्ञापित किया।

@ दिनांक ७ अप्रेल २०२३ को संध्याकालीन सत्संग सभा के मध्य में माननीय श्रीमान ओम बिरला जी (लोकसभा अध्यक्ष) द्वारा पूज्य महाराजश्री का सम्मान कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर माननीय श्री ओम बिरला जी द्वारा आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी के पावन जीवन चरित्र के प्रमुख प्रसंगों को उपस्थित प्रेमीजनों को सुनाते हुए पूज्य महाराज श्री द्वारा वर्तमान में किये जाने वाले सेवा प्रकल्पों का भी खूब बखान किया तत्पश्चात् पूज्य महाराज श्री ने पखर प्रसाद प्रदान कर श्री माननीय द्वारा दिये जाने वाले सहयोग के प्रति साधुवाद ज्ञापित किया।

@ चैत्र मेले का प्रसारण पूरे अमरापुर परिसर सहित बाहर मुख्य सड़क तक किया जा रहा था इसके लिए पच्चीसों जगह पर विशाल स्क्रीन व ध्वनि प्रसारण यंत्र लगाये गये थे.

@ चैत्र मेले की चित्रमय व चलचित्र झलकियों के संग्रहण वास्ते श्री जयकिशन टेकवानी व उल्हासनगर की 'जग्गू मूवीस्' की पूरी टीम जुटी हुई थी.

@ चैत्र मेले में पचासों प्रकार की सेवाओं में समर्पित सैकड़ों की सख्यां अधिक सेवाधारी सेवा कार्यों में जुटे देखे जा रहे थे.

@ चैत्र मेले में समस्त कार्यक्रमों वह चाहे हवन-यज्ञ हो या ध्वजावंदन, शोभायात्रा या सत्संग आनन्द, सबका पूरे समय यूट्यूब पर लाईव प्रसारण 'जग्गू मूवीस्' के सहयोग से एचडी कैमरों की मदद से किया गया जिसे देश-दुनिया के हजारों भक्तों ने कम्प्यूटर, लेपटॉप व मोबाईल पर देखा व सत्संग का श्रवण किया. पल्लव समय ०८ अप्रेल को तो अनगिनत प्रेमियों ने सत्संग का लाईव प्रसारण देखा-सुना.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आचार्य द्धारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है। जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं।

102वें चैत्र मेले में पूज्य महाराजश्री द्वारा अमृत रस वर्षा

प्रेम प्रकाश मण्डल का १०२वां चैत्र मेला दिनांक ०४ अप्रेल से ०८ अप्रेल २०२३ तक श्री अमरापुर दरबार जयपुर में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । इस मेलें में देश-विदेश के अनेक शहरों से हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर अपना जीवन सफल किया। मेले के प्रथम दिवस पर संत मण्डल के सत्संग के पश्चात् पूज्य सतगुरु महाराज जी ने पहले मंगलाचरण जयकार फिर नाम संकीर्तन धुनी के साथ अमृत वचनों की वरखा प्रारंभ की-

दोहा : सतगुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास !
कहे टेऊँ नित सुमति दे, संतन माहिं निवास ! !

प्रार्थना भजनः

हे अखण्ड हे अपार, ज्ञान ध्यान के भंडार !
बार बार नमस्कार, स्वीकार कीजिए !
सतगुरु सर्वानंद हमें अभय दान दीजिए !

1 पतित पावन पाप हरो,सिर पे दया हाथ धरो !
अधम का उद्धार करो, भव से पार कीजिए !
सतगुरु सर्वानंद हमें....

2 तुम्हें छोड़ कहाँ जाऊँ, सुझत नहिं ठौर काऊँ,
बार-बार पड़त पाऊँ,शरण राख लीजिए !
सतगुरु सर्वानंद हमें....

3 उमर सारी पाप भारी, करत-करत मति है मारी !
क्षमा करो एह बारी, सुमति दान दीजिए !
सतगुरु सर्वानंद हमें....

प्रार्थना भजन

गुरुदेव करुणा सिंध तुम,चरणारविंद की धूल हम..
शरणागतम्-शरणागतम्...

1 गुरुदेव ब्रह्म स्वरुप हो, हो प्रकाश तुम रवि रूप हो !
तेरी इक किरण मिल जाए तो, हो दूर सभ अज्ञान तम !
शरणागतम्-शरणागतम्...

2 जल थल पवन आकाश मे,पावक में सूर्य प्रकाश में !
परिपूर्ण तेरा तेज सभ में, हो ज्योति तेरी रही है रम..
शरणागतम्-शरणागतम्...

3 दुख से भरे संसार में सुख है सिर्फ तेरे प्यार में !
तेरी शरण में जो भी आ गया,मिट जाएं उसके सारे गम
शरणागतम्-शरणागतम्...

प्रेम से बोलिए सतनाम साखी.....

सतगुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास !

श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की अमृतमयी वाणी और ये गुरु महाराज जी का ये पावन चैत्र मेला एक सौ दूसरा प्रारम्भ होने जा रहा है मेले का उद्देश्य क्या है ?

दोहा:मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय !
अन्तर आत्म जो मिले, मेला कहिये सोय ! !

अपने आत्म स्वरुप की प्राप्ति गुरुदेव की कृपा से होती है!

दोहा :पूरण आत्म ज्ञान दे काटे जो दुख द्वंद !
ऐसे गुर को करत हूं, कह टेऊँ नित वंद ! !

आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा अमरापुर दरबार टण्डो आदम में जिस मेले की स्थापना की गई और यहाँ पे भारत वर्ष में जयपुर में अमरापुर दरबार

बनाके सतगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज जी ने ये चैत्र मेला यहाँ पर प्रारम्भ किया लगभग १९५२ से । तो उन संत महापुरुषों की महिमा बहुत निराली है अद्भुत है!

सूरत ते कीरत बड़ी, बिना पंख उड़ जाए !
सूरत तो जाती रहे पर, कीरत कभी न जाए ! !

कुछ विशेष गुण उनके जीवन में हैं गुरु महाराज जी के जीवन में भी बहुत विशेष गुण थे जगत का कल्याण करने के लिए उन्होंने अवतार लिया!

जब जब प्रेमिनि निज हित कारण तुमको पूकारा !
तब तब गुर अवतार धरे तुम सबको निस्तारा !

जगत का कल्याण करना यही उनके जीवन का उद्देश्य था और उनके अंदर कौन से गुण थे मानवीय गुण तो होते ही हैं लेकिन देवीय गुण दूसरों का उपकार करना भला करना अनंत गुण उनके जीवन में थे प्रेम प्रकाश ग्रंथ की अमृतमयी वाणी में गुरु महाराज जी ने फरमाया है!

भजन :
अमरापुर के योगी आया,
जुग-जुग जीव उबारा किया करतारा
1 खिम्यां सम संतोष विचारी, परमार्थ से परउपकारी !
प्रेमिनि किया पुकारा,लिया अवतारा..अमरापुरे के

2 दानी जत् सत् धीरजधारी,
बाहर भीतर भजन भंडारी, ज्ञान अमर फल सारा,
करन आहारा.....अमरापुर के...

3 अष्ट कमल पर आसन किया,
अमर देश को देख सु लिया !
पाया दिव्य दीदारा, अगम अपारा....अमरापुर के...

4 बिन भूमि जिनि बाग लगाया,
चारों साधन चिमन बनाया !
पुष्प गुणन गुलज़ारा, हुआ हुबकारा..अमरापुर के...

5 कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, भाग जगे घर आए हमारे !
लेखा यम निवारा, किया जयकारा....अमरापुर के...

खिम्यां सम संतोष विचारी,परमार्थ से परउपकारी...

कोई भी स्वार्थ नहीं..परमार्थ और दूसरों का उपकार करना यही उनके जीवन का उदेश्य रहता है, परब्रह्म परमात्मा तक पहुंचाने वाले गुरुदेव हैं!

पशु ते मानुष कियो, मानुष ते कियो देव !
कह टेऊँ गुरुदेव ने, कीना अलख अभेव ! !

यही मेले का भी उदेश्य है और यही उनके जीवन का भी उदेश्य है तो आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सतगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज जिन्होंने भारत वर्ष में आने के बाद गुरु महाराज के नाम का प्रचार उनकी महिमा का गुणगान किया घर घर मे उनके नाम को पहुंचाया सतगुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज, सतगुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज उन सभी महापुरुषों के पावन चरणों में प्रणाम करें ।

ये मेला सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी के द्वारा स्थापित था और अभी तक १०२ वर्ष हो गए अभी तक ये पावन मेला चल रहा है और हम सब सोए हुए थे रात को ही इंद्र भगवान आकर हाजरी लगाकर गए तो हम भी अपने जीवन को सफल बनाएं सेवा में और सत्संग में । व्यर्थ की बातों में समय न गवाएं क्योंकि समय बहुत अमूल्य होता है और उसमे भी जो गुरु महाराज जी के मेले का समय है बहुत कीमती है !

शिक्षा : समय का अति कदर करना, खोईए ना कुसंग में !
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में ! !
दोहा : कलयुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग !
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुःख भंग ! !

सेवा और सत्संग ये मुख्य साधन हैं
तन से सेवा और मन से नाम का सिमरण कर गुरु महाराज जी की अमृतमयी वाणी का श्रवण करें और गुरु महाराज जी के नाम का गुणगान करके अपने जीवन को सफल बनाएं !

तुम्ही सतगुरु तुम पित माता, तुम ही हरिहर तुम ही विधाता,
हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामि ।
जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.....

चैत्र मेले के पल्लव के अवसर पर पूज्य महाराज श्री द्वारा किया गया सत्संग

अप्रेल माह में प्रेम प्रकाश पंथ के महाकुम्भ चैत्र मेले के समापन अर्थात् पल्लव के सत्संग में सतगुरु महाराज जी ने अमृत वचनों की वर्षा करते हुए कहा-

दोहा: गुरु को कीजे दण्डवत् कोटि कोटि प्रणाम !
कीट न जाने भृंग को गुरु करले आप समान ! !

दोहा: पशु ते मानुष कियो मानुष ते कियो देव !
कह टेऊँ गुरुदेव ने कीना अलख अभेव ! !

सदाई कुर्बान राम....वंजा तहींजे नावं तां।
जहिं पियारे प्रेम रस दिनो आतम ज्ञान।
रहयो रतिय जेतरो अंदर में अज्ञान।
सामी सब जहांन सामाणों स्वरूप में।।

भजन: सद्गुरु तुहींजे नाले तां मां वार वार बलिहार वंजा।
1-मुक्तिधाम ते पहुंचण खातिर नालो तुहींजो दाकण आ।
नाम जपे जिन मुक्ति पाती, तिनिताँ मां बलिहार वंजा।।.....
2-भव सागर खां पार तरण लाए नालो तुहींजो बेड़ो आ हरे राम
नाम जपे जे पार तरीया थई तिनिताँ मां बलिहार वंजा।।....
3- जन्म मरण दुःख मेटण खातिर नालो तुहींजो औषधि आ।
नाम जपे जिन जन्मु मिटायो तिनिताँ मां बलिहार वंजा।।....
4-विषयनु जो विषु मेटण खातिर नालो तुहींजो अमृत आ।
नाम जपे जिन अमृत पीतो तिनिताँ मां बलिहार वंजा।।....
5-कहे टेऊँ वठि नाम गुरुअ खां सतगुरु नाम खजानों थई ।

दोहा: पूरण सतगुरु देव से पूरण ले उपदेश।
कह टेऊँ तिहं सुमरके पाओ पूरण देश।।

5-कहे टेऊँ वठि नाम गुरुअ खां सतगुरु नाम खजानों थई ।
सतगुरु खां जिन नाम वतो थई तिनिताँ मां बलिहार वंजा।।....
सद्गुरु तुहींजे नाले तां मां वार वार बलिहार वंजा.....
वारि वारि बलिहार वंजा...

प्रेम से बोलिए सतनाम साखी....

गुरु को कीजे दण्डवत् कोटि कोटि प्रणाम !
कीट न जाने भृंग को गुरु करले आप समान ! !

तो छोटा सा कीट उसको भृंगी कान में भूं भूं का शब्द करके अपने जैसा ही बना देता है।

ये संसार मे केवल एक उदाहरण है के शब्द के द्वारा रूप का भी परिवर्तन हो जाए, किसी भी रंग रूप आकार का कीट हो भृंगी अपने मिट्टी के घर मे उसे बंद करके उसके कानों में शब्द सुना करके अपने जैसा रूप बना देता है। उसी प्रकार से गुरुदेव भी शब्द सुनाकर मंत्र-दान दे करके जीव को अभ्यास का मार्ग बताके अपने जैसा बना देते हैं। जैसे वो स्वयं हैं सत्-चित-आनंद स्वरुप जहां पे दुःख का लेश मात्र भी नहीं उस स्थिति तक गुरुदेव कृपा करके पहुंचा देते हैं। संत महापुरुषों की बड़ी महिमा है, ऐसी कृपा करने वाला संसार मे कोई भी नहीं है।

भजन: करे भूं भूं भृंगी भृंग थी बणाए,
कपहिं जे कियें जो जन्म थी मटाए।
असर नेठ ईंदो-ईंदो अंग अंग में,
रहण साण रंगजी वेंदे नेठ रंग में।
रही दिस सदोरा संतन जे संग में
रहण साण रंगजी वेंदे नेठ रंग में।

....कपहिं जे कियें जो जन्म थी मटाए।...जैसे ये जीव अविनाशी का अंश होते हुए भी परेशान है...भगवान कहते हैं की ये मेरा अंश है...

श्लोक: ममैवांशो जीव लोके जीव भूत: सनातन:

जैसा मैं हूँ वैसा ही ये है अंशी और अंश में भिन्नता नहीं होती बर्फ की बड़ी सिल्ली में जो ठंडापन है छोटे से टुकड़े को तोड़कर जिव्हा पर रखेंगे तो वही ठंडापन मिलेगा गुड़ की बड़ी ढेली में जो मीठापन है छोटा सा टुकड़ा तोड़कर के जुबान पर रखेंगे तो उसमे भी वहीं मीठापन मिलेगा जो बड़े में है वो छोटे में है।

दोहा: ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुखराशी

जो ईश्वर है..परमात्मा अविनाशी है तो जीवात्मा भी अविनाशी है उसका भी नाश होने वाला नहीं ईश्वर अनादि है तो जीवात्मा भी अनादि है ऐसा ना समझे की दो चार जनम मुझे हुए हैं जब से सृष्टि प्रारंभ तब से जीवात्माऐं जो चल रही हैं वो चल माना अनंतकाल से हम जन्म और मृत्यु के चक्कर मे पड़े हुए हैं ऐसा ना समझे की कुछ जन्म हुए हैं..

श्लोक: बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी आप चाहे महान शिक्षाशास्त्री बनें, हजारों पुस्तकें पढ़ें परन्तु प्रभु के प्रेम व भक्ति के बिना आपका ज्ञान किसी काम का नहीं है।

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ।।

जो पहले नहीं था वो अब बनने वाला नहीं

श्लोकः नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः ।।

जो पहले से चलता आ रहा है वही चलता रहेगा नया कुछ भी बनने वाला नही तो परमात्मा की ये सृष्टि अनादि है जीव भी अनादि है और बहुत जन्मों से भटक रहा है संसार के चक्कर मे....

.....धारी है हजारों देह सुत दारा हजारों कर चुका रोता रहा हंसता रहा तन धर मर चुका जंह जंह गया दुःख ही लहा अब तो ना व्याकुल चित हो ब्रह्मातम में लवलिन हो मत भोग में आसक्त हो..राम....

तो हजारों देह धारण करके अब हम इस शरीर के अंदर पहुंचे हैं पहले ना जाने कौन से शरीर कौन से लोक कहाँ कहाँ पे भ्रमण हुआ वो ईश्वर को पता है किसी को पता नहीं लेकिन अब गुरुदेव के चरणों में बैठकर उनसे ये प्रार्थना करें की ये फिर से भटकना बंद हो जाए हमेशा के लिए ये जो दुखों की प्राप्ति है दुःखालयमशाश्वतम् उन दुखों से छुटकारा प्राप्त हो जाए...

आज पल्लव का दिन है गुरु महाराज जी से प्रार्थना करें...

भजनः 1 जहिड़ो आहियां तहिड़ो तुहिंजो
तो बिन सतगुरु ब्यौ ना मुंहिंजो !
बाझ करे बाझारा पहिंजी,
मुंहिंजो साथ कजइं तूँ सहिंजो
नाथ नजर सां निहार जइं निहार जइं... हरे राम...
नाथ नजर सां निहार जऐं निहार जऐं...
सतगुरु मूखे मन मां कीन विसार जए...सतगुरु मुखे...

2 तुहिंजी स्मृति अमृत आहे,
मुअल दिलिन खे छदे जियाए !
याद करे हिन दीन दास खे,
गफलत मां वठ जल्द जागाए !
प्रेम जी सुरकी पियार जइं... सतगुरु मुखे...

3 कूंज बचन खे जिअिं चिताए,
कच्छु अंडा जिअं ध्यान में धारे !
बालक खे जिअिं माउ संभारे,
दाता मंगतनि खे थो सारे !
साजन तिऐं सम्भार जइं ! !....सतगुरु मुखे...

4 बालापन खां हाणे ताईं कयम कचायूँ जेके साईं !
कहे टेऊँ दे माफी तिनिजी अगते अवगुण खां त बचाईं
सुमति सच्ची सेखार जाइं...सेखार जाइं...
सतगुरु मुखे मन मां कीन विसार जइं,
दर्शन देई दिल ठार जऐं...ठार जइं..सतगुरु मुखे....

तो उनकी आसीस और कृपा उनकी दया दृष्टि रहे तो बेड़ा पार हो जाएगा! उनके पावन चरणों में प्रार्थना करें.. प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना गुरु महाराज जी ने सिंध टंडेआदम अमरापुर दरबार पे की और लगभग १३७ वर्ष पहले सतगुरु अवतार लेकर आए फिर प्रेम प्रकाश मंडल अमरापुर दरबार की स्थापना की फिर चैत्र का मेला गुरु महाराज जी का ये १०२ एक सौ दूसरा मेला है और गुरु महाराज जी की आयु जब ३० वर्ष थी तब उन्होंने इस अमरापुर दरबार टंडेआदम का निर्माण भी किया और चैत्र मेले का प्रारंभ किया उस समय उनकी अवस्था ३० वर्ष थी और १०२ वर्ष हो गए इस मेले को...गुरु महाराज की पावन शिक्षाऐं उनके उपदेश उनके द्वारा दी गई प्रेरणायें वही जीवन को दिशा देने वाली हैं । सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज..उनके बाद हमारे सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज जो १९४२ में उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् आसन पर विराजमान हुए और १९७७ में यहीं अमरापुर दरबार में उन्होंने ब्रह्म लोक में प्रयाण किया उसके बाद सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज...सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज और प्रेम प्रकाश मंडल के संतों की श्रृंखला बहुत बड़ी है जो सिंध से बड़े-बड़े संत महापुरुष हुए स्वामी माधवदास जी, स्वामी बसंतराम, स्वामी चंदनराम जी, स्वामी चेतन प्रकाश जी, स्वामी जय प्रकाश जी, स्वामी रवि प्रकाश जी, स्वामी भजन दास जी, स्वामी मुरलीधर जी, स्वामी गंगाराम जी, स्वामी गणेशानन्द जी महाराज...अनंत संत हैं और कवियों ने तो लिखा कि उनके पीछे श्रृंखला थी उनके शिष्यों की..

भजनः

1 अमरापुर गिरनार जा बेला गुरु गोरख ज्याँ चौरासी चेला !
बारहं माह मता हा मेला सुबुह दिसो तोड़े शाम..
बणायो अमरापुर जो धाम..
2 एनल हक जो नारो हणी व्यो, मर्द सचो मंसूर बणी व्यो !
प्रेमीन खे पहिलाज वणी व्यो, सभई करीन प्रणाम...

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जो कोई भी अपनी हस्ती को मिटा देता है,
वह ही बड़ों की परम्परा को संभाल सकता है।

बणायो अमरापुर जो धाम..
अमर देश खां देह धरे आयो स्वामी टेऊँराम...
बणायो अमरापुर जो धाम..

तो गुरु गोरख ज्यां चौरासी चेला अनंत संतों के चित्र इस हाल में भी लगे हुए हैं और वो भी पूरे चित्र नहीं हैं बहुत संत महापुरुष जो उनकी शरण में आए उनको उन्होंने वैराग्य ज्ञान का उपदेश देकर प्रभु भक्ति की तरफ लगाया तो ये प्रेम प्रकाश मंडल सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा बनाया हुआ है...

भजन:1 स्वामी टेऊँराम सुखन जो आ धाम
माता जहिंजी कृष्णा, पिता चेलाराम
खंडूअ जे शहर में आयो,
वठी अवतार अवतारी..असांजो पंथ...
2 स्वामी सर्वानंद जिएं मुरली मुकुंद,
बाणी मीठी बुधाए दिनो जहिं आनंद
कटे अज्ञान अविद्या खे
ज्ञान जी ज्योत जहिं बारी..असांजो पंथ...'
3 स्वामी शांति प्रकाश पुजाए सभ आश,
देई नाम जो दान काटे जम जी फास
पियारे प्रेम अमृत खे
राह रोशन कई सारी....असांजो पंथ...
4 स्वामी हरिदासराम दे प्रेम जो पैगाम,
सिख्या सची बुधाए, दे दिल खे आराम
भरम संसा सभई साढ़े
कनथा ज्ञान उजियारि...असांजो पंथ...
5 अमरापुर धाम आहे सो अभिराम,
झूले झंडो सदाई अमर रहे नाम
झुकायाँ शीश चरनन में वञां सतगुरु तां बलिहारी...
असांजो पंथ आ प्यारो प्रेम प्रकाशी सुखकारी
साखी सतनाम मन्तर आ वसे जुग जुग हिय फुलवारी

तो पल्लव का समय है गुरु महाराज जी के पावन श्री चरणों में प्रार्थना करें लौकिक कामनाएं प्रत्येक मनुष्य के मन मे रहती है! संसारिक व्यावहारिक दुनियादारी की कठिनाईयां वो भी उनकी कृपा से दूर होती हैं और आध्यात्मिक उन्नति नाम मे मन लगे जीवन का उद्धार हो ये गुरु महाराज जी से प्रार्थना करें सद्बुद्धि सुमति का दान अच्छे विचार मन मे चले ऐसी उनकी कृपा होगी उनके श्रीचरणों में बैठकर आसीस मांगे पल्लव पाएं प्रार्थना करें!

पल्लव (प्रार्थना)
जो जन आ गुरु शरण में बैठ करे अरदास
कह टेऊँ तिस दास की पूरण करिए आस
दुख सर्व ही दूर हो लगे न यम की त्रास
कारज होवन रास संशय कोई ना रहे
आशवंदी गुर तो दर आई,तुझ बिन ठौर न काई...
तुम हरि दाता,तुम हरि माता,मेरी आश पुजाई...
पाए पल्लव मैं पेर प्यादी,आयस हेत मंझाई...
तन मन धन अरदास करे मैं,माँगत नाम सनेही...हरे राम...
नाम तुम्हारा साबुन करसां,धोसां पाप सभेई
कहे टेऊँ गुर लोक तीन में,आवागमन मिटाई....
आवागमन मिटाई सतगुरु आवागमन मिटाई....
आशवंदी गुर तो दर आई,तुझ बिन ठौर न काई...

पल्लव के पश्चात सतगुरु महाराज जी ने साखी शिवोऽम् की धुनि लगाकर सभी प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया...जयकार मनाई...फिर....सभी पूज्य संत मंडल को, प्रेमियों को गुरु महाराज जी के इस पावन चैत्र मेले के समापन की लाख-लाख बधाई....

मुहिंजो स्वामी टेऊँराम आ.. खण्डूअ वारो !
मुहिंजो जोगी टेऊँराम आ... खण्डूअ वारो !
जहिंजो पिता चेलाराम आ...खण्डूअ वारो !
जहिंजो गुरु आसुराम आ...खण्डूअ वारो !
जेको नेही निष्काम आ...खण्डूअ वारो !
जेको सदा सुखधाम आ...खण्डूअ वारो !
ओ खण्डूअ वारो साईं टंडे वारो ! टंडे वारो साईं डंडे वारो..
जेको दीनन दयाल आ.. खण्डूअ वारो !
जेको राखो रखपाल आ.. खण्डूअ वारो !
कंदो सभखे निहाल आ.. खण्डूअ वारो !
जेको बेड़ा कंदो पार आ.. खण्डूअ वारो !
ओ खण्डूअ वारो साईं टंडे वारो ! टंडे वारो साईं डंडे वारो..
जेको राम सां मिलाए थो..खण्डूअ वारो !
सुख धाम सां मिलाए थो..खण्डूअ वारो !
बेड़ा पार लगाए थो.. खण्डूअ वारो !
दम देर न लाए थो....खण्डूअ वारो !
सभ कारज कराए थो...खण्डूअ वारो !
सभ दुखड़ा मिटाए थो....खण्डूअ वारो !
बोल सतगुरु साईं टेऊँराम जी महाराज की जय

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश राम-नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं।

सिंधी फिल्म 'युगपुरुष सद्गुरु सांई टेऊँराम' के प्रीमियर शो का आयोजन जयपुर के प्रसिद्ध राजमंदिर सिनेमा में हुआ

जयपुर । श्री प्रेम प्रकाश पंथ के मंडलाचार्य एवं सिंध के महान संत युगपुरुष सद्गुरु साईं टेऊंराम जी महाराज के जीवन चरित्र पर आधारित सिंधी फिल्म का प्रीमियर शो रविवार, 23 अप्रैल 2023 को राजमंदिर सिनेमा में आयोजित किया गया। श्री अमरापुर स्थान के स्वामी मनोहर प्रकाश जी, संत नामदेव जी, संत मोनूराम जी, संत श्यामलाल जी, संत नवीन जी अजमेर के संत राजूराम जी, संत हरीश जी, सहित अमरापुर संत मंडली ने दीप प्रज्वलित कर फिल्म की विधिवत शुरुआत की।

इस अवसर पर स्वामी मनोहर प्रकाश जी ने बताया कि सद्गुरु साईं टेऊंराम जी महाराज ने अपने उपदेशों में यह शिक्षा दी है कि कभी भी संत-महात्माओं की निन्दा नहीं करनी चाहिए। उन्होंने जीव हत्या की घोर निन्दा की और सामाजिक कुरूतियों को दूर करने की कोशिश की। साथ ही उन्होंने मांस, मच्छी, शराब आदि का सेवन नहीं करने का भी उपदेश दिया। साईं टेऊंराम जी की इन्ही शिक्षाओं और उपदेशों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने हेतु इस फिल्म का प्रदर्शन किया गया है।

इस अवसर पर संत मोनूराम जी ने कहा कि इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाली अलौकिक दिव्य महाविभुतियों के जीवन चरित्र को प्रदर्शित करने वाली फिल्मों को आमजन के बीच प्रदर्शित करने से आमजन उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाकर अपना जीवन सफल बना सकते हैं। इसी कड़ी में इस फिल्म का प्रीमियर शो आज दर्शकों को दिखाया जा रहा है और जल्द ही इस फिल्म के अनेक शो देश-विदेश में प्रदर्शित किये जायेंगे।

इस सिंधी फिल्म के प्रीमियर शो का आयोजन श्री अमरापुर स्थान, एम.आई. रोड, जयपुर द्वारा दर्शकों के लिए निःशुल्क किया गया। इस अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश मंडल, श्री अमरापुर नवयुवक मंडल एवं श्री प्रेम प्रकाश सेवा मंडल व महिला मंडली के सदस्यों ने फिल्म को देखा। सभी दर्शकों ने फिल्म की बहुत प्रशंसा की और सद्गुरु साईं टेऊंराम जी महाराज की शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने की बात कही।

फिल्म के डायरेक्टर गोपाल राघानी ने जानकारी देते हुए बताया कि इस धार्मिक सिंधी फिल्म की अधिकांश शूटिंग गुजरात के कच्छ जिले एवं आसपास के क्षेत्रों में की गई है। राघानी ने बताया कि इस फिल्म में युगपुरुष सद्गुरु साईं टेऊंराम जी महाराज के जीवन से संबंधित घटनाओं एवं उनके लीलाओं, उपकारों का उल्लेख किया गया है।

उल्लेखनीय है कि सद्गुरु साईं टेऊंराम जी एक महान संत दरवेश थे, जिन्होंने मानवता के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए। इस फिल्म में उनके द्वारा किए परोपकारी कार्यों और उपदेशों को प्रदर्शित किया गया है। राघानी ने बताया कि फिल्म प्रदर्शन का उद्देश्य सद्गुरु साईं टेऊंराम जी के जीवन की शिक्षाओं को प्रचारित और प्रसारित करना है।

राजमंदिर सिनेमा के विजिटर बुक में संतो के हस्ताक्षर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश सब दुःखों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति चाहो तो अपनी दावा छोड़ो।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 94वां जन्मोत्सव

मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पीठ के चतुर्थ पीठाधीश्वर-मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 94वाँ जन्मोत्सव 30 अप्रेल से 4 मई 2023 तक बड़े ही धामधूम से श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों एवं देश-विदेश में मनाया गया. इस अवसर पर धार्मिक अनुष्ठानों के अतिरिक्त समाजसेवा से जुड़े कई कार्य भी अनेक शहरों में किये गये. अंतिम दिन पाठों के भोग, भण्डारे के आयोजन के साथ सायंकालीन सत्संग सभाओं में दीप प्रकाश किया गया.

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में मुख्य कार्यक्रम

श्री अमरापुर दरबार जयपुर एवं श्री प्रेम प्रकाश आश्रम अजमेर में

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 137वाँ जन्म महोत्सव

सोमवार 19 जून से शुक्रवार 23 जून 2023 तक

जयपुर में सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के सानिध्य में

गुरु पूर्णिमा महोत्सव सोमवार 03 जुलाई 2023

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी ईश्वर की भक्ति और अपने धर्म को कभी न छोड़ें, चाहे प्राण भी चले जायें।

सतगुरु हरिदासराम जन्म महिमा भजन

तर्ज़ : हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से

घडी शुभ आई आ, वरी वधाई आ
आयो आ सुन्दर श्याम
ओ मुंहिंजो सतगुरु हरिदासराम - 2

1.घुण्डन जी नगरी में अजु आयो आ अवतारी,
आहे पिता हीरानन्द ज्ञानी माता मोतिल भागनवारी ।
तिनजे घर आयो हली -2 ,
अजु सतगुरु पूरण काम
घडी शुभ आई आ .....

2.सतगुरु जी कृपा सा जहिं पूरण पदवी पाई ।
मन मन्दिर जे अन्दर जहिं ज्ञान जी ज्योत जगाई ।।
नाम जपे गुरुदेव जो-2 ,
कयो हरि में आ विश्राम ।
घड़ी शुभ आई आ .....

3.देवन भी अजु वर्षा आहे गुलन सन्दी वरसाई,
महिमा प्यारे गुरु जी अजु सभिन मिलीं आ गाई
धरती भी सदके वञे - 2 ,
कयो ऋषिन मुनिन् प्रणाम ,,
घडी शुभ आई आ.....

संत जीतूराम प्रेम प्रकाशी

तर्ज - उड़े जब-जब जुल्फें तेरी

स्वामी हरिदासराम हैं आये - 2
गांव घुन्डन में आनन्द छाए - 2
लेकर आया अवतारा, गुरु प्यारा

हो..... पिता हीरानन्द झूमते गाये - 2
माता मोतिल मन हर्षाये - 2
लगाएं मिल जयकारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये - 2 .....

हो..... सतगुर की सूरत प्यारी - 2
मैं वार वार बलहारी - 2
गुर है सबसे न्यारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये - 2 .....

हो..... देवी देवता फूल बरसाएं - 2
सब मिलकर झूला झुलाएँ -2
आया है जग हितकारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये - 2 .....

हो..... आज सब मिल देवो बधाई - 2
गाँव घुन्डन में खुशियाँ आयी - 2
''दीपक'' किया उजियारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये - 2 .....

दीपक केवलरामानी

तर्ज - राधिका गोरी से, ब्रिज की छोरी से....

थलु : गुरुवर प्यारो आ- नेणनि जो तारो आ ।
सत्गुर हरिदासराम-कयो सभ तहिंखे मिली प्रणाम ।।

1. जहिंजी माता मोतिलबाई-पिता हीरानन्द सुखदाई ।
जायो ग्राम घुँडन में सांई-खुश थ्या सभ माई-भाई,
देवनि भी सुर्ग मां- गुल फुल वरसाया जाम ।।

2. दिसी सुहिणी सूरत प्यारी- थियो आनंद आ चौधारी,
सत्गुर जे जनम वठण सां- घर घर में थी वई दियारी,
आयो देह धरे परमात्मा- जीअं अयोध्या में राम ।।

3. नंढिडे नंढिडे सांईअ खे - झूले में झूलो झुलायूं,
करे दर्शन थे मन प्रसन्न - अची पहिंजा भाग बणायूं,
अजु घर-घर में वाधायूं वरियूं-विर्हायूं मिठायूं ताम ।।

4. अचो पाण भी गदिजी सभई-सत्गुर जो जनम मनायूं,
तहिंखे हर हर सीस निवायूं-नचूं गायूं ताड़ियूं वजायूँ,
कहिड़ी महिमा गायां मां तुहिंजी-आहीं सर्व सुखन जो धामु।।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

पहले रास्ता बनाना चाहिए या गाड़ी? तुम स्वयं अपने आपसे पूछने का प्रयास करो। पहले रास्ता बनाना चाहिए। वह कैसा? 'पहला साधन कर गुरु मूरत में।'

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित...

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जीवन दर्शन निबंध प्रतियोगिता

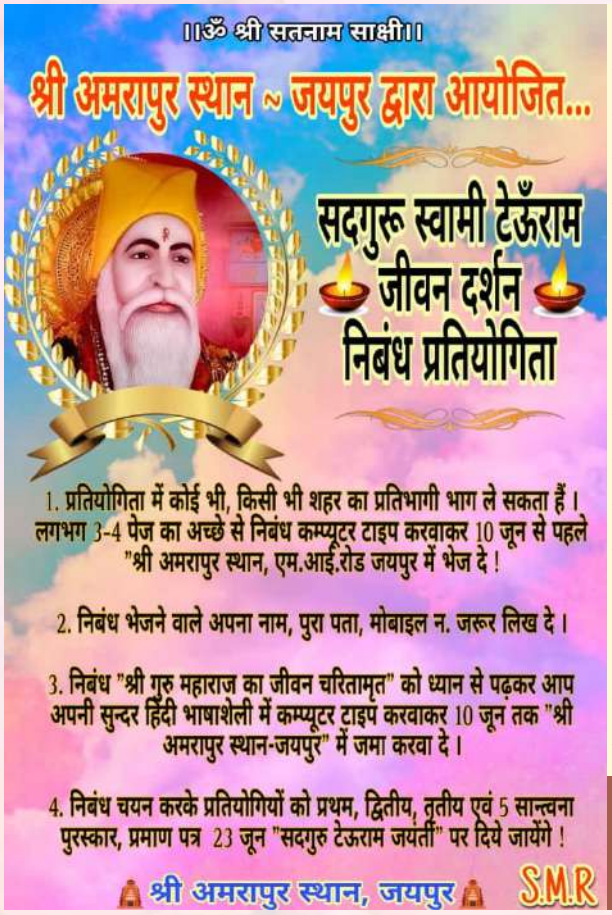

1. प्रतियोगिता में कोई भी, किसी भी शहर का प्रतिभागी भाग ले सकता हैं । लगभग 3-4 पेज का अच्छे से निबंध कम्प्यूटर टाइप करवाकर 10 जून से पहले ''श्री अमरापुर स्थान'', एम.आई. रोड जयपुर में भेज दे !

2. निबंध भेजने वाले अपना नाम, पूरा पता, मोबाइल न. जरूर लिख दे ।

3. निबंध ''श्री गुरु महाराज का जीवन चरितामृत'' को ध्यान से पढ़कर आप अपनी सुन्दर हिंदी भाषाशैली में कम्प्यूटर टाइप करवाकर 10 जून तक ''श्री अमरापुर स्थान-जयपुर''में भेज दे ।

4. निबंध चयन करके प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 5 सान्त्वना पुरस्कार, प्रमाण पत्र 23 जून ''सदगुरु टेऊँराम जयंती'' पर दिये जायेंगे !

निबंध इस पते पर भेजें --
सदगुरु टेऊराम जीवन दर्शन निबंध प्रतियोगिता
श्री अमरापुर स्थान- एम आई रोड जयपुर (राज)

गंगास्तुति

गंगा-अवतरण दिवस 30 मई विशेष

हे मातु गंगे! सरित पावनि, गौरि, सुर-सरि, मालिनी। तुम जन्हुकन्या, भीष्ममाता, विवर-थल-नभ-गामिनी।।
हे सुर-तरंगिनि! शैलनन्दिनि, सर्वकालसुभाषिनी। भागीरथी, नगपतिपदी, अघपुंज-कल्मषहारिनी।।
हे देवसरि! शुचि जाह्नवी, शिव-जटा-जूट-बिहारिनी। सुरवाहिनी, अविरल प्रवाहित, लोक हित वरदायिनी।।
हे पतितपावनि! मोक्षदायिनि, देवि, पापविनाशिनी। माँ! सगरपुत्रों की तुम्हीं हो, अवतरित उद्धारिनी।।
हे मातु! तुम देवी दया की, सकल-मंगलकारिनी। मैं पातकी 'मोहन' शरण, तुम, पाप-पुंज-विदारिनी।।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अन्तकाल में संसार के सब कार्य - व्यवहार किसी काम के न होकर बेकार हो जायेंगे। इसलिये भगवान के भजन को कभी भी नहीं भूलना चाहिये।

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

साईं टेऊँराम प्रकाशोत्सव जयन्ती महोत्सव

23 जून शुक्रवार

जन्मोत्सव 19 से 23 जून 2023

घर घर जलाऐं दीपमाला

ब्रह्मरूप ब्रह्ममयी- सर्गुण रूप साकार। टेऊँराम बन धरती पर- लिया प्रभू रूप अवतार।।

भगवद् स्वरूप, प्रभु परमात्मा के अंशावतार प्रेम प्रकाशियों के आराध्य, मंगलमूर्ति परमहंस तपोनिष्ठ, ब्रह्म स्वरूप, श्री सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा का 137वाँ प्राकट्य उत्सव, शुक्रवार, 23 जून को देश-दुनिया के प्रेमप्रकाशी भक्त जन-सत्संगी घर-घर दीप जलाकर 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' का दिव्य जन्मोत्सव प्रकाश पर्व के रूप में श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाएँ. अपनी आस्था को दृढ़ करें.

इस तरह मनाएँ बाबा का प्रकाशोत्सव

इस पवित्र अवतरण दिवस पर पवित्र कामना से पञ्चदिवसीय साईं टेऊँराम अखण्ड ज्योत भी अपने घर, प्रतिष्ठान, मंदिर, आश्रमों में जगायी जा सकती है. मंदिर—आश्रम, घर—आङ्गन के प्रवेश द्वारों पर आकर्षक रंगोली द्वारा 'स्वास्तिक 卐 एवं ॐ' आकार का शृङ्गार, अशोकपत्र व पुष्पों का तोरण (बांधनी), दीपमाला आदि रंगारंग विद्युतीय सजावट करके साईं टेऊँराम भगवान के प्रकाश पर्व को श्रद्धा से मनाएँ.....

ऐसे करें साईं टेऊँराम आराधना

सायंकाल को 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' की प्रतिमा विराजमान कर पुष्पों की सुन्दर सजावट करके धूप-दीप, अगरबती, इत्र की सुन्दर महक के बीच सामूहिक रूप से मंगलगीत, बधाईगान, साईं टेऊँराम चालीसा पाठ, ब्रह्मदर्शनी, गुरु प्रार्थनाष्टक का पाठ करना चाहिये. साईं टेऊँराम संकीर्तन, सत्नाम साक्षी महामंत्र जाप, साईं टेऊँराम भजन संध्या, साईं टेऊँराम जन्म साखी का पाठ करके साईं टेऊँराम बाबा की महाआरती सामूहिक रूप से करना चाहिए.

महाप्रसाद

फल-मिठाई इत्यादि छत्तीसों प्रकार के व्यजनों के भोग बाबा को अर्पित करके उसे साईं टेऊँराम बाबा के महाप्रसाद 'ढ़ोढा चटनी' के साथ संगत में वितरित करना चाहिये.

मंगलमूर्ति 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' के दिव्य अवतरण दिवस को दीपोत्सव - आनन्दोत्सव के रूप में पूरे संसार भर के भक्तजन श्रद्धाभाव से मनाकर साईं का आशीर्वाद प्राप्त करें.

सभी भक्तजनों को अवतरण दिवस की अनन्त-अनन्त बधाईयाँ व बाबा की महती कृपा सदैव हम सब पर बरसती रहे, ऐसी पवित्र शुभ कामनाएँ ! सभी की शुभ मनोकामनाएँ साईं टेऊँराम भगवान पूरी करें !

लें शुभ संकल्प

शुक्रवार, 23 जून 'साईं टेऊँराम बाबा की जयंती' के पावन अवसर पर हम सभी भक्तजन लें एक शुभ संकल्प-
आज से हम कभी भी माँस, मछली, अण्डा, शराब, जुआ, पान मसाला, गुटखा, बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू आदि पदार्थों का सेवन कभी नहीं करेंगे तथा जीवन में क्रोध- गुस्सा नहीं करेंगे. ऐसा शुभ संकल्प सभी जरूर लें !

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश हर एक मनुष्य को प्रात:काल सवेरे उठना चाहिये। जिससे नेत्रों में रोशनी और विवेक शक्ति बढ़ेगी।

अमरापुर गमन

श्री रामदेव रहेजा

पिनगंवा। श्री रामदेव रहेजा, उम्र ६१ वर्ष, दिनांक २५ अप्रेल २०२३ को इस नश्वर देह का परित्याग कर गुरूचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री गोवर्धनदास ठाकवानी

जयपुर । श्री गोवर्धनदास ठाकवानी दिनांक २८ अप्रेल २०२३ को इस सांसारिक देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

श्री कन्हैयालाल खानचंदानी

जयपुर। दादा कन्हैयालाल खानचंदानी ७७ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक ३० मई २०२३ को अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर परम पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में अमरापुर धाम सिधारे। आप श्री अमरापुर दरबार जयपुर में समाधि साहिब की सेवा में पूर्ण रूप से समर्पित थे । पूर्व में आप भंडारा साहिब में भी अपनी सेवायें देते थे ।

श्रीमती इन्द्रादेवी कटारिया

डबरा। उदारचित, मृदुभाषी, सरल हृदय श्रीमती इन्द्रा देवी कटारिया, उम्र ७६ वर्ष धर्मपत्नि अमरापुरवासी डॉ. धर्मपाल कटारिया, सुपुत्री अमरापुवासी श्री नवलमल जी लालवानी, ग्वालियर दिनांक ३ मई २०२३ को अपनी संसार यात्रा पूर्ण कर पूज्य आचार्यश्री के पावन श्रीचरणों में अमरापुर धाम सिधारी । आपका समूचा परिवार (सुपुत्र डॉ. कमल कटारिया) श्री प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा की सेवा में पूण मनोयोग से संलग्न है ।

श्री राकेश नारायण

धर्मशाला। श्री राकेश नारायण जी ७५ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक १६ अप्रेल २०२३ को इस भौतिक संसार का परित्याग कर परम पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में अमरापुर धाम सिधारे।

श्री शिवनदास पंजवानी

ग्वालियर। श्री शिवनदास पंजवानी सुपुत्र अमरापुरवासी श्री छुग्गोमल जी ८५ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक २८ मई २०२३ को इस भौतिक संसार का परित्याग कर परम पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में अमरापुर धाम सिधारे। आपका समूचा कुटुंब पूर्वजों सहित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर की सेवा-सुश्रुषा में संलग्न रहा है ।

श्रीमती रूकमणी देवी राजवानी

जयपुर । श्रीमती रूकमणी देवी राजवानी, आयु ७० वर्ष, श्री अमरापुर दरबार जयपुर में सेवा करती हुई आचार्य श्री के परम पावन धाम अमरापुर सिधारी ।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सदगुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु देव स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जिसके मन में प्रभु के प्रति प्रेम नहीं, वह मृतक समझें।
जिसके मन में भगवद् प्रेम है वह ही जीवित है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

पूज्य सत्गुरु महाराज जी का निवास इस अवधि में श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, भोपतवाला, हरिद्वार, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर एवं श्री प्रेम प्रकाश स्वर्गाश्रम, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में रहा है। परिस्थिति अनुसार आगे के कार्यक्रम निश्चित होते ही पूज्य गुरु महाराज जी की आज्ञा से आगामी अंक में दिए जाएंगे।

व्रत–पर्व–उत्सव

19 मई 2023– शुक्रवार– अमावस्या
21 मई 2023– रविवार– चन्द्र दर्शन
25 मई 2023– गुरुवार– चौथ
(मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
21 मई से 25 मई 2023–सांई टेऊँराम वर्सी उत्सव
25 मई 2023– गुरुवार – सांई टेऊँराम पुण्यतिथि
30 मई 2023– मंगलवार– श्री गंगा दशहरा
31 मई 2023– बुधवार– एकादशी
04 जून 2023– रविवार– पूर्णिमा
07 जून 2023– बुधवार– गणेश चर्तुर्थी
14 जून 2023– बुधवार– एकादशी
18 जून 2023– रविवार– अमावस्या
19 जून 2023– सोमवार– चन्द्रदर्शन
19 से 23 जून 2023– सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जन्मोत्सव
23 जून 2023– शुक्रवार– सद्गुरु टेऊँराम चालीसा पूर्ण एवं सद्गुरु टेऊँराम अवतरण दिवस

सबसे अपवित्र है क्रोध कहा जाता है कि भगवान विश्वनाथ की पुरी काशी की बात है. गंगा–स्नान करके एक संन्यासी घाट से ऊपर जा रहा थे. भीड़ तो काशी में रहती ही है, बचने का प्रयत्न करते हुए भी एक चाण्डाल बच नहीं सका, उसका वस्त्र उन संन्यासी जी से छू गया. अब तो संन्यासी को क्रोध आया. उन्होंने एक छोटा पत्थर उठाकर मारा चाण्डाल को और डाँटा– अंधा हो गया है, देखकर नहीं चलता, अब मुझे फिर स्नान करना पड़ेगा. चाण्डाल ने हाथ जोड़कर कहा– अपराध हो गया, क्षमा करें. रही स्नान करने की बात सो आप स्नान करें या न करें, मुझे तो अवश्य स्नान करना पड़ेगा. संन्यासी ने आश्चर्य से पूछा– तुझे क्यों स्नान करना पड़ेगा ? चाण्डाल बोला– सबसे अपवित्र महाचाण्डाल तो क्रोध है और उसने आप में प्रवेश करके मुझे छू दिया है. मुझे पवित्र होना है उसके स्पर्श से. संन्यासी जी ने लज्जा से सिर नीचा कर लिया.

नोट: अप्रत्याशित कठिन समय के कारण मई 2023 का अंक भी पीडीएफ फाइल द्वारा सोशल मीडिया पर प्रकाशित किया जा रहा है। सामान्य स्थिति होने तक कार्यक्रम आयोजन सम्बंधी जानकारी पूज्य गुरुदेव भगवान की आज्ञा से सभी प्रेमियों को सोशल मीडिया द्वारा दी जाती रहेगी।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली अपनी भाषा का ज्ञान हमें आपस में जोड़ के रखता है।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं अपेल २०२३ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 16 ।।

जिसमें तृष्णा होय विशाला, सो नर निश्चय जान कंगाला।
सिन्धु उदर को भरन सुहेला, तृष्णातुर को भरन दुहेला।
तीन भुवन के पाय समाजे, तृष्णावन्त न कबहूँ राजे।
तृष्णावान न थिरता पावे, बहुत द्रव्य हित निशदिन धावे।
तृष्णा से है शोषा को जन, कह टेऊँ संतोष जिसी मन।।4 ।।

" जंहिं में तृष्णा (लोभु, लालचि) तमामु घणी आहे, अहिड़ो नरु (मनुषु) पक ई पक कंगालु (निर्धनु, ग़रीबु, दरिद्री) समुझो. हिकु भेरो समुंड जो पेटु भरणु सवलो आहे, पर तृष्णा वारे लालची, लोभी मनुष जो पेटु भरणु कठिन आहे. टिन्ही लोकनि जा सभु सुख-साधन मिलण खां पोइ बि लालची-लोभी मनुषु कड़हिं बि राज़ी कोन थी सघंदो आहे. तृष्णा रखंदड़ु, अभिलाषी, लोभी मनुषु राति-ड़ींहं धन-दौलत ऐं बियनि पदार्थनि पुठियां पियो डोड़ंदो आहे; जंहिंकरे हू किथे बि स्थिरता प्रापति करे कोन सघंदो आहे." सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जनि चवनि था, "जंहिंजे मन में संतोषु आहे, उहो ई मनुषु तृष्णा खां बची सघे थो."

मनुष जूं कामनाऊं, इच्छाऊं, आशाऊं बेअंतु आहिनि. उहे कड़हिं बि पूरियूं थी सघण जूं नाहिनि. हिक कामना पूरी थी त उन मां वरी बी कामना/इच्छा पैदा थींदी ऐं इहो सिलसिलो जारी रहंदो. मन जी बेचैनी ऐं दुखनि जी जननी कामना ई हूंदी आहे. अहिड़ीअ तरह कंहिं पदार्थ खे प्रापति करण जी तृष्णा, लालचि पिणु बेअंतु हूंदी आहे. इहा लालचि, इहो लोभु कड़हिं बि पूरो थियण जहिड़ो कोन हूंदो आहे. बाहि में गिह विझण जियां लालचि, तृष्णा वधंदी वेंदी आहे. 'अज़ा खपे, अज़ा खपे, अज़ा खां .... अज़ा कमायां ... अज़ा ज़मीन ख़रीद करियां ....' वग़ैरह जे तृष्णाउनि जी का बि सीमा कान हूंदी आहे. सुख माणण जी तृष्णा पिणु बेअंतु हूंदी आहे. इहा विशाल तृष्णा ई मनुष जे पतन जो, दुख जो, बेआरामीअ जो कारणु आहे. सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज इन तृष्णा, लालचि खां बचण, परे रहण जो उपदेशु करनि था. चवनि था त जंहिंजे मन में संतोषु आहे, उहो ई तृष्णा खां बची सघंदो. अहिड़ो सचो संतोषु प्रापति थींदो प्रभूअ सां प्रेमु करण सां, मन खे ईश्वर डांहुं मोड़ण सां, नाम-स्मरणु करण सां, प्रभूअ खे पाणु अर्पणु करण सां!

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : श्रीचन्द पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, कार्यालय : प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474 001 से प्रकाशित किया गया।
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : श्रीचन्द पंजवानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)